ISSN 2349-6614

सितम्बर 2019

मूल्य 50 रु.

प्रत्यूष

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

शुभं भवतु कल्याणं, आरोग्यं सुखवर्धनम्।
आत्मतत्त्व प्रबोधाय, ज्योति देवि नमोऽस्तुते।।

राज्यस्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह (जयपुर) में
मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से
बेस्ट कलेक्टर का अवार्ड प्राप्त करती उदयपुर कलेक्टर आनंदी।

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 17 अंक 7 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

The Gurukul School

Play Group to X

हॉस्टल सुविधा उपलब्ध

दी गुरुकुल कॉलेज

गांव बुढ़ल, लालपुरा, कुराबड़, उदयपुर (राज.) मो. 7610982730, 9660569205

St. Jyoti Ba Phule Public School

PLAY GROUP TO X

Jyoti Ba Phule Girls College

बस सुविधा उपलब्ध

मादड़ी पुरोहितान, अग्निशमन केन्द्र के सामने, हाइवे बाईपास, उदयपुर

द गुरुकुल कॉलेज, तह. गिर्वा, उदयपुर

राज्य सरकार से मान्यता एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से सम्बद्धता प्राप्त

प्रवेश प्रारम्भ

भारत व राज्य सरकार द्वारा देय छात्रवृत्ति सुविधा

B.A. (रेगुलर) **वार्षिक फीस मात्र 8000/- रुपये**

भूगोल, समाज शास्त्र, लोक प्रकाशन, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी, अग्रेजी, अर्थशास्त्र, चित्रकला

B.Sc. (रेगुलर) **वार्षिक फीस मात्र 16000/- रुपये**

रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित

छात्रावास सुविधा व तृतीय वर्ष में प्रतियोगिता परीक्षा हेतु कोचिंग

Online Form या Inquiry के लिए Login करें

www.thegurukulcollegebudal.org.in

प्रवेश हेतु सम्पर्क: निदेशक– दिवाकर माली

सेन्ट ज्योति बा फुले पब्लिक स्कूल, मादड़ी पुरोहितान, उदयपुर

मो. 9414168050, 9772740999

thegurukulcollege2015@gmail.com

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर - अंश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग पेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - नासिर खान
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313001

सितम्बर
2019
वर्ष 17, अंक 7

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

अन्दर के पृष्ठों पर...

07 विश्लेषण

अब सिर्फ 'पीओके' पर बात

14 शिक्षक दिवस

शिक्षा, शिक्षक और समाज

22 लोककला

राजस्थान का अद्भुत नृत्य 'भवाई'

33 संवत्सरी

पर्यूषण यानी आत्मा का उत्सव

36 प्रतिक्रिया

'इंजेक्शन लगा है, दर्द तो होगा'

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पावोराइट प्रिंट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा "रक्षाबन्धन" धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

Estd. 2003

IHMC-U

INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT CATERING & TOURISM, BALICHA, UDAIPUR

Affiliated to Rajasthan ILD Skill University

- B. Voc. In Hospitality & Hotel Administration : 3 Years
- Diploma in Hospitality & Hotel Administration
- Diploma in Food Production
- Diploma in Food & Beverage
- Diploma in Front Office
- Diploma in House Catering : 1 Years

Main Campus : 413-417, Institutional Area Seth Ji Ki Kundal, Near Amar Garh Hotel, Balicha, Ahmedabad Road, Udaipur

Contact : 9414245214, 9950369808, 8107296417

For details please visit : www.ihmcudaipur.org

पस्त पाकिस्तान की बौखलाहट

अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को मिला विशेष दर्जा खत्म करने के भारत सरकार के फैसले के बाद पड़ोसी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बौखलाहट में जिस तरह से ताबड़तोड़ फैसले कर रहे हैं, उनमें भारत पर तो कोई विशेष असर पड़ने वाला नहीं है, अलबत्ता उनके देश के लिए ही वे आत्मघाती सिद्ध होंगे। प्रधानमंत्री इमरान खान बौखलाहट में परोक्ष रूप में भारत को परमाणु हमले और गागले को इन्टरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस तक में उठाने धमकी दे बैठे हैं। वे दुनिया भर में शोर मचाने के साथ ही अपने जिगरी चीन की मार्फत सुरक्षा परिषद तक का द्वार भी खटखटा चुके हैं, लेकिन सब ओर से निराशा ही हाथ लगी है। आतंकवाद को पनाह देने वाला पाकिस्तान का चरित्र जगजाहिर है, ऐसे में उसके झूठ को कौन और क्यों सुने। वह दुनिया के सामने आज से नहीं अपने गठन से ही अविश्वसनीय राष्ट्र के रूप में पहचाना जाता रहा है।

कश्मीर विवाद भारत और पाकिस्तान का आपसी मसला है। लेकिन धारा 370 भारत का आंतरिक मामला था, जो गलती कभी हुई, उसे सुधारा ही तो गया है। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने इसीलिए तो यह कहा कि पाकिस्तान से अब जो भी बातचीत होगी, वह सिर्फ और सिर्फ पीओके अर्थात् पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले कश्मीर के हिस्से को लेकर होगी। इस्लामाबाद से भारतीय उच्चायुक्त अजय बिसारिया को निष्कासित करने, दिल्ली से अपने उच्चायुक्त को वापस बुलाने, द्विपक्षीय कारोबार को स्थगित करने, भारत-पाक के बीच बस-रेल व हवाई मार्ग बंद करने जैसे कदम उठाकर पाकिस्तान ने कंगाली के स्तर तक पहुंची अपनी ही अर्थव्यवस्था को और पलीता लगाना है। भारत पर उसके इन फैसलों का जरा भी असर पड़ने वाला नहीं है। यहां हम याद दिला ना चाहेंगे कि ये बौखलाहट में वह पहले भी ऐसे फैसले करके वापस ले चुका है।

बालाकोट हमले के बाद पाकिस्तान ने भारत को दबाव में लेने की मंशा से भारतीय यात्री विमानों के लिए अपना हवाई क्षेत्र लम्बे समय तक बंद रखा था और जब भारत सरकार ने इस पाबंदी को उपेक्षित कर दिया तो रोजाना की आर्थिक मार से जख्मी पाकिस्तान को फैसला पलटना भी पड़ा था। दरअसल पाकिस्तान को परेशानी इस बात को लेकर है कि जिस कश्मीर मुद्दे की बदौलत वह दुनिया भर में शोर मचाकर और विशेषकर मुस्लिम राष्ट्रों को ब्लैकमेल कर कटोरा भरा करता था, वे सभी चहेते खत्म तो हुए ही, टेरर फंडिंग और आतंकी समूहों की मनी लॉन्ड्रिंग पर रोक लगाने में नाकाम रहने पर फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफटीएफ) की ओर से काली सूची में डाले जाने का खतरा भी मण्डराने लगा है। मुस्लिम राष्ट्रों ने भी अब उसके कश्मीर राग पर ध्यान देना बंद कर दिया है। पाकिस्तान की बौखलाहट का एक बड़ा प्रमाण प्रधानमंत्री इमरान खान का वह आदेश भी है, जिसमें उन्होंने सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा का कार्यकाल तीन साल बढ़ा दिया है, जबकि एक समय था जब विपक्ष में रहते वे इस तरह के फैसलों के घोर आलोचक रहे। हाल ही लिए गए उनके इस फैसले का अब उनके अपने ही लोग विरोध कर रहे हैं।

पाकिस्तान को समझ लेना चाहिए कि कश्मीर को लेकर भारत की नीति एकदम साफ है। वह आगे भी राष्ट्र की एकता, अखण्डता और शांति के लिए बड़े फैसले लेने में बिल्कुल नहीं हिचकेगा। घाटी के लोगों को भी उन ताकतों को करारा जवाब देना होगा, जो पिछले 70 वर्षों से दो विधान दो निशान के बूते पर उनका शोषण कर अपने राजनैतिक और वैयक्तिक स्वार्थों की ही पूर्ति कर रहे थे। भारत सरकार को भी उनसे सतर्क रहने की आवश्यकता है। पस्त पाकिस्तान और उसके गुर्गे कभी भी कोई भी कारस्तानी अंजाम दे सकते हैं।

इस समय देशवासियों, विशेषकर राजनैतिक दलों से सम्बद्ध नेताओं-कार्यकर्ताओं को ऐसा कुछ नहीं कहना और करना है, जिससे पाकिस्तान व उसके पाले पोसे आतंकवादियों का मकसद पूरा हो। उनका मूल मकसद ही हमारे देश की शांति व्यवस्था और अर्थव्यवस्था को भंग करना है। ऐसे मौकों पर हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम अपने गुस्से अथवा जोश में होश न खोएं। जिसका सबसे अच्छा तरीका यही है कि जम्मू-कश्मीर को देश की मुख्यधारा में शामिल करने के केन्द्र सरकार के फैसले के अनुरूप वहां शांति और भाई चारा कायम करने के प्रयासों को पुरजोर समर्थन दें। इस समय जरूरत इस बात की भी है कि देश की शांति और एकता को न सिर्फ बनाए रखें, बल्कि एक नई ऊंचाई तक ले जाने की कोशिश करें। यह प्रसन्नता का विषय है कि घाटी फिर से चहचहाने लगी है।

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. किशन सिंह चुण्डावत

मै. चुण्डावत रेस्टोरेन्ट

मै. चुण्डावत कोल्ड कोर्नर

पृथ्वी सिंह चुण्डावत
9928147129

पुराना रेल्वे स्टेशन रोड, ठोकर चौराहा, उदयपुर

जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 के प्रावधान संसद की मंजूरी के बाद खत्म हो गए हैं। जम्मू-कश्मीर की अपनी विधानसभा तो होगी लेकिन अब वह केन्द्र शासित प्रदेश होगा। लद्दाख, जम्मू-कश्मीर का हिस्सा न रहकर अब अलग केन्द्र प्रशासित प्रदेश होगा, जिसकी विधानसभा नहीं होगी। केन्द्र के इस फैसले से जम्मू-कश्मीर सहित पूरा भारत खुश है। इस फैसले के बाद अब भारत के हिस्से वाले जम्मू-कश्मीर में कोई समस्या नहीं है। सिर्फ पीओके पर ही है निगाहें !

✍ नंद किशोर

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख का नए सिरे से पुनर्गठन कर भारत सरकार ने पीओके पर अपना दावा और मजबूत कर दिया है। संसद में गृहमंत्री अमित शाह ने भी कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर भी हमारे कश्मीर का हिस्सा है और वो भारत का आंतरिक भू-भाग है।

जम्मू-कश्मीर में विधानसभा की 107 सीटें हैं। जबकि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर की 24 सीटों को खाली रखा जाता है। ये एक तरह से प्रतीकात्मक है, जो ये संदेश देता है कि पीओके के भारत में शामिल होने के बाद उन 24 खाली सीटों को भरा जाएगा।

जम्मू-कश्मीर के नए सिरे से पुनर्गठन के बाद अब वहां विधानसभा सीटों की संख्या 107 से बढ़कर 114 हो गई है। फिलहाल जम्मू कश्मीर असेंबली में 111 सीटें हैं, जिसमें 46 सीटें घाटी की, 37 सीटें जम्मू क्षेत्र की और 4 सीटें लद्दाख क्षेत्र की हैं। लद्दाख अब केन्द्र द्वारा प्रशासित प्रदेश होगा।

पाकिस्तान के भड़काऊ कदम

कश्मीर के पुनर्गठन के फैसले का बड़ा असर पड़ने वाला है। पीओके इस लिहाज से अहम होता है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने इस फैसले पर बौखलाहट में कहा है कि दो परमाणु संपन्न देशों के रिश्ते बिगड़ना ठीक नहीं है। लेकिन विशेषज्ञ बताते हैं कि दरअसल कश्मीर और लद्दाख को केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा देकर भारत ने कश्मीर की समस्या ही खत्म कर दी है।

अब कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान के साथ बातचीत का मुद्दा खत्म हो गया है। अब एक ही मुद्दा बचा है और वो है पाकिस्तान के अनधिकृत कब्जे वाले कश्मीर का। भारत अब पीओके के मसले पर ही पाकिस्तान के साथ बात चीत को आगे बढ़ा सकता है क्योंकि कश्मीर के अपने अंदरूनी मसले को भारत ने अनुच्छेद 370 को खत्म करके सुलझा लिया है। हालांकि पाकिस्तान हताशा में अटपटे फैसले लेता जा रहा है, जो उसी के लिए नुकसानदेह है।

इससे भारत पाकिस्तान के बीच इंडस वाटर ट्रीटी पर असर पड़ सकता है। इस ट्रीटी के मुताबिक कश्मीर में भारत के हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट को पानी मिलता है। पाकिस्तान इसमें अड़चन पैदा कर सकता है। पाकिस्तान पीओके में आतंकवाद को बढ़ावा देकर भारत को परेशान कर सकता है।

आज के दौर में पाकिस्तान कोई मजबूत कदम नहीं उठा सकता। वो प्रोपेगेंडा फैलाकर, आतंकवाद को बढ़ावा देकर भारत के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता है। पाकिस्तान इस मसले को यूनाइटेड नेशन में भी उठा सकता है। लेकिन वह सिर्फ दोनों देशों को परस्पर बातचीत के माध्यम से विश्वास बहाली के उपाय करने की ही सलाह दे सकता है जबकि भारत अब पीओके के मसले पर ज्यादा मुखर होकर अपनी आवाज उठायेगा। हालांकि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 17 अगस्त को हुई बैठक में कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान को आंसू बहाने वाली पटखनी मिली। कुल 15 में से नौ सदस्यों ने भारत का साथ दिया और इस तरह चीन और ब्रिटेन द्वारा पेश प्रस्ताव खारिज हो गये।

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को पाकिस्तान ने दो हिस्सों में बांट रखा है जिन्हें आधिकारिक तौर पर वहां आजाद जम्मू कश्मीर और गिलगित बाल्टिस्तान के रूप में जाना जाता है।

1947 में पाकिस्तान ने कश्मीर के इस हिस्से पर कब्जा जमा लिया था। इसकी सीमा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत, उत्तरपूर्व में अफगानिस्तान, चीन के शिनजियांग और पूर्व में भारत के हिस्से वाले कश्मीर से लगती है।

पीओके की राजधानी मुजफ्फराबाद है। यहां 8 जिले में 19 तहसीलें आती हैं। अब इस पूरे इलाके पर को हस्तगत करने की भारत की पुरजोर कोशिश होगी।

'ग्रेटर कराची' की मांग

खुद पाकिस्तान के भीतर अलग देश और स्वायत्त क्षेत्र की मांग बढ़ने लगी है। पिछले दिनों पश्तूनों की पार्टी 'पीटीएम' ने अलग पश्तूनिस्तान की मांग की थी। बलूचिस्तान की मांग तो जग-जाहिर है। अब इसी क्रम में एक नया नाम जुड़ गया है वो है 'ग्रेटर कराची' का। पाकिस्तान में रहने वाले मुहाजिरों ने ग्रेटर कराची की मांग की है। कराची में मुहाजिरों की आबादी सबसे ज्यादा है। मुहाजिर वो लोग हैं जो 1947 के बंटवारे के समय भारत से पाकिस्तान गए थे।

मुहाजिर, बलूच, पश्तूनों के अधिकार का हनन

'वॉइस ऑफ कराची' नाम के संगठन ने पाकिस्तान से स्वायत्त 'ग्रेटर कराची' की मांग की है। यूएस में रहकर अपनी गतिविधियां चलाने वाले इस समूह का कहना है कि पाकिस्तान को तब तक कश्मीरियों के हक के लिए बोलने का कोई अधिकार नहीं है, जब तक कि वह खुद अपने यहां मुहाजिर, बलूच, पश्तून और हजारा समुदाय के लोगों को उनके अधिकार नहीं दे देता।

अमेरिका में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे वॉइस ऑफ कराची के चेयरमैन नदीम नुसरत ने कहा, 'पाकिस्तान को किसी भी क्षेत्रीय या अंतरराष्ट्रीय मंच पर कश्मीरियों के बारे में बोलने का कोई हक नहीं है, क्योंकि उसने खुद अपने नागरिकों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित कर रखा है।' उन्होंने बताया कि पाकिस्तान कश्मीर में जनमत संग्रह की बात करता है, पर क्या वह यही अधिकार अपने यहां के उन अल्पसंख्यकों को देने के लिए तैयार है, जो सांस्कृतिक और जातीय भिन्नता की वजह से हाशिये पर हैं।

पाकिस्तान के पुनर्गठन की मांग

मुहाजिर नेता ने यह भी कहा कि पाकिस्तान सरकार के कई मंत्री व शीर्ष अधिकारी विदेशों में कश्मीर अलगाववादी नेताओं से मिलते रहे हैं और वहां अस्थिरता को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान के पुनर्गठन की मांग को लेकर जल्द ही प्रयास शुरू किए जाएंगे, जो 1940 के लाहौर रिजॉल्यूशन और मुहाजिर, बलूच, पश्तून और गिलगित-बाल्टिस्तान के लोगों के मुताबिक होगा।

फ्लैश बैक

1937 से 1943 तक जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री रहे। निर्विभागीय मंत्री(1947-48) के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में शामिल अयंगर ब्रिटिश वायसराय द्वारा 'दीवान बहादुर' के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित थे।

370 के रचनाकार जी. एस. अयंगर

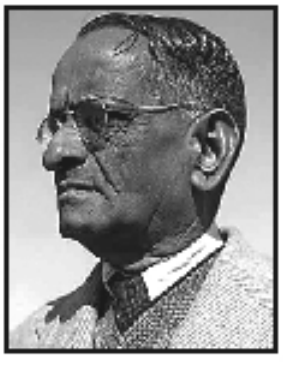

संविधान के विवादास्पद अनुच्छेद 370 का मसौदा नरसिम्हा गोपालस्वामी अयंगर ने तैयार किया था। 1937 में अयंगर को जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया और 1943 तक इस पद पर काम किया। वह 1943-47 तक काउंसिल ऑफ स्टेट भी रहे।

तमिलनाडु के तंजौर जिले में जन्मे अयंगर 1947-48 के दौरान नेहरू मंत्रिमंडल में बिना पोर्टफोलियो के मंत्री रहे। 1948-52 तक उन्होंने रेलवे और परिवहन मंत्रालय का कार्यभार संभाला। इसके एक साल बाद (1952-53) के लिए वह रक्षा मंत्री भी बने। अयंगर 29 अगस्त 1947 को नियुक्त भारतीय संविधान की सात सदस्यीय मसौदा समिति का हिस्सा थे। बाद में उन्होंने अनुच्छेद 370 का मसौदा तैयार किया, जिसने जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान किया। बिना पोर्टफोलियो के मंत्री के रूप में अयंगर कश्मीर मामलों के प्रभारी थे। बाद में कश्मीर विवाद को लेकर संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

अयंगर ने 1947 तक सात खिताब अपने नाम किए। इसमें दीवान बहादुर का खिताब भी शामिल था जो ब्रिटिश वायसराय द्वारा दिया गया सर्वोच्च खिताब था। वे 1905 में मद्रास सिविल सेवा में शामिल हुए और 1919 तक डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया। अयंगर का 10 फरवरी 1953 में 71 वर्ष की उम्र में निधन हुआ था। भारत के संविधान में 17 अक्टूबर, 1949 को अनुच्छेद 370 को शामिल किया गया था। यह अनुच्छेद जम्मू-कश्मीर को भारत के संविधान से अलग कर राज्य को अपना संविधान खुद तैयार करने का अधिकार देने वाला था।

तीन तलाक को 'तलाक'

तीन तलाक से आज़ादी और न्याय देने वाला मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक 2019 संसद के दोनों सदनों से पारित होकर राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद अब कानून बन गया है। अब किसी भी मुस्लिम महिला को तीन बार 'तलाक' कहकर घर और ज़िन्दगी से बेदखल करने वाले शौहर पर कानून के मुताबिक मुकदमा दर्ज कराया जा सकेगा।

✍: फिरोज अहमद

मुस्लिम महिलाओं के लिए अभिशाप बने तत्काल तीन तलाक पर प्रतिबंध संबंधी विधेयक आखिर संसद के दोनों सदनों में पारित हो कर कानून बन गया। कतिपय विपक्षी दलों के विरोध के बावजूद राज्यसभा में तत्काल तीन तलाक विधेयक 84 के मुकाबले 99 वोटों से पारित हुआ। मोदी सरकार ने मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक को राज्यसभा से पारित कराकर इस सदन में अपने दूसरे कार्यकाल में दूसरी बार विपक्ष को शिकायत मात दी। सूचना का अधिकार बिल (संशोधन) पारित कराने में सरकार पहले ही सफल हो चुकी थी। एआईए के सहयोगी जदयू ने वोटिंग का बहिष्कार किया तो बीजद ने समर्थन। बाईएसआर कांग्रेस के सदस्यों ने वोटिंग से अनुपस्थित रहकर बिल पारित कराने की राह आसान कर दी। बिल पारित होने से मोदी सरकार का ध्येय, कुछ करने की लगन और राजनीतिक प्रबंधन भी रेखांकित हो गया। अच्छा होता कि विपक्ष इस विधेयक के विरोध पर नहीं अड़ता और मुस्लिम समाज को यह संदेश देने में भागीदार बनता कि इस कुप्रथा को खत्म करने का समय आ गया है। क्या इससे अजीब बात और कोई हो सकती है कि कुछ विपक्षी दलों ने मुस्लिम समाज के उन नेताओं के साथ खड़े होना संसद किया जो यह तर्क दे रहे थे कि तत्काल तीन तलाक की प्रथा गलत तो है, लेकिन उसे खत्म करने की पहल नहीं होनी चाहिए? तत्काल तीन तलाक की कुप्रथा उन सामाजिक बुराइयों में से है जो महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक साबित करती है। क्या ऐसी कोई प्रथा धर्मसम्मत कही जा सकती है जो पति को पत्नी को एक झटके में छोड़ने का अधिकार देती हो? तत्काल तीन तलाक को बुराई के चलन में होने के कारण मुस्लिम महिलाएं अपने वैवाहिक भविष्य को लेकर आशंका से घिरी रहती थीं। इससे भी खराब बात यह थी कि जब उन्हें एक झटके में तीन तलाक दे दिया जाता था तो वे एक तरह से सड़क पर आ जाती थीं। तत्काल तीन तलाक को दंडनीय अपराध बनाने की जरूरत इसलिए और बढ़ गई थी, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट की ओर से तत्काल तीन तलाक को अमान्य करार दिए जाने के बादभी इस तरह के तलाक का सिलसिला कायम था। यह एक तरह से सुप्रीम कोर्ट को दी जाने वाली सीधी चुनौती ही थी।

इस ऐतिहासिक कानून के तहत एक साथ तीन तलाक बोलने को संज्ञेय अपराध बनाया गया है और इसकी शिकायत होने पर पुलिस बिना वारंट के आरोपी को गिरफ्तार कर सकेगी। इस मामले में दो तीन साल की सजा का प्रावधान किया गया है। विधेयक पर बहस के दौरान विपक्ष ने कहा कि इसका मकसद गुरिलग परिवारों को तोड़ना है। नेता प्रतिपक्ष गुलाम नबी आजाद ने सवाल उठाया कि जब तलाक देने वाले पति को तीन साल तक जेल में भेज दिया जाएगा तो वह पत्नी व बच्चों को गुजारा भत्ता कैसे देगा? यह दलील ठीक हो सकती है, लेकिन सवाल है कि अगर जेल भेजने का प्रावधान ही न हो तो पुलिस के पास कार्रवाई का क्या रास्ता होगा? भरण-पोषण के लिए केवल आर्थिक तंगी ही साधन नहीं होता, सम्पत्ति से भी भरपाई होती है। कानून में जमानत का भी प्रावधान है। तीन तलाक की प्रथा को सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक करार देते हुए फैसला दिया था कि ऐसा करने पर किसी की भी शादी टूटी हुई नहीं मानी जाएगी, मगर दो साल पहले आए फैसले के बावजूद तीन तलाक का सिलसिला चला हुआ था। सरकार ने अब तक अध्यादेशों के सहारे कानून को जिंदा रखा लेकिन अब पक्का कानून बन गया है।

कानून से मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों को बल मिलेगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि मुस्लिम नेताओं व धर्म गुरुओं ने अपने समुदाय की महिलाओं को हक दिलाने की बजाए तीन तलाक प्रथा का समर्थन किया। जब समाज सामाजिक बुराइयों को खत्म करने में सहयोग देने से इंकार करे तो फिर सख्त कानूनी उपाय जरूरी हो जाते हैं। उम्मीद की जाती है कि नए कानून से तत्काल तीन तलाक के मामले बंद होंगे और मुस्लिम महिलाओं के मान सम्मान सहित उनके हित सुरक्षित होंगे।

इन देशों में बैन

इंडिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इराक, श्रीलंका, सीरिया, ट्यूनीशिया, मलेशिया, इंडोनेशिया, साइप्रस, जॉर्डन, अल्जीरिया, इरान, ब्रुनेई, मोरक्को, कतर और यूएई में भी ट्रिपल तलाक बहुत पहले से ही प्रतिबंधित है।

पीएम को बांधी राखी

तीन तलाक के खिलाफ कानून बनने से उत्साहित वाराणसी की मुस्लिम महिलाओं ने क्षेत्रीय सांसद और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने हाथ से राखी बनाकर भेजी। इस नेक काम को कुछ मुस्लिम मौलानाओं ने सराहा तो कुछ ने इसे सस्ते प्रचार का तरीका बताया।

मुस्लिम महिलाओं का कहना है, जिस तरह प्रधानमंत्री मोदी ने तीन तलाक जैसी कुप्रथा को खत्म करवाया, वह केवल एक भाई ही कर सकता है। अपने भाई के लिए हम बहनों ने अपने हाथों राखी बना कर भेजीं। राखी के ऊपर मोदी की फोटो लगी थी। राखी बनाने वाली रामपुर की हुमा खान का कहना है, मोदी ने तीन तलाक जैसी कुरीति को खत्म करवाया। वे प्रधानमंत्री और वाराणसी के सांसद होने के साथ ही साथ देश की सभी मुस्लिम महिलाओं के बड़े भाई हैं। रक्षाबंधन पर भी कोलकाता से कई गुरिलग महिलाओं ने दिल्ली पहुंच कर प्रधानमंत्री मोदी को राखी बांधी। तलाक मामले की प्रमुख याचिकाकर्ताओं में से एक इशरत जहां ने मोदी को राखी बांधकर उनका कुप्रथा के उन्मूलन के लिए शुक्रिया अदा किया।

सफरनामा

22 अगस्त 2017 : सायरा बानो मामले में उच्चतम न्यायालय का फैसला, तलाक-ए-बिद्दत गैर-कानूनी घोषित

20 दिसम्बर 2017 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2017 लोकसभा में पेश

19 सितम्बर 2018 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) अध्यादेश, 2018 जारी

17 दिसम्बर, 2018 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2018 लोकसभा में पेश

27 दिसम्बर 2018 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2018 लोकसभा में पारित

12 जनवरी 2019 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) अध्यादेश, 2019 जारी

21 फरवरी 2019 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) दूसरा अध्यादेश, 2019 जारी

21 जून, 2019 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2019 लोकसभा में पेश

25 जुलाई, 2019 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2019 लोकसभा में पारित

30 जुलाई, 2019 :
मुस्लिम महिला(विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2019 राज्यसभा में पेश तथा पारित

शादी के लिए राजपाट छोड़ा, अब तीन तलाक

मलेशिया के पूर्व राजा सुल्तान मोहम्मद-वी ने 23 साल छोटी रूसी ब्यूटी क्वीन से शादी के लिए अपनी राजगद्दी छोड़ी थी। अब शादी के सिर्फ एक साल बाद ही उन्होंने पिछले दिनों तीन तलाक प्रथा के जरिए तलाक ले लिया है। जून में रिहाना ने एक बेटे को जन्म दिया जिसके बाद सुल्तान ने उन्हें तलाक दे दिया, उनके अनुसार यह बच्चा उनका नहीं है। सुल्तान ने पिछले साल मॉस्को में 23 साल छोटी ओक्साना वोवोदीना से शादी की थी।

51 साल के सुल्तान मोहम्मद-वी के गद्दी छोड़ने के बाद मलेशिया में पहंग राज्य के सुल्तान अब्दुल्ला सुल्तान अहमद शाह को नया राजा बनाया गया था। अब्दुल्ला सुल्तान ने सुल्तान मोहम्मद पंचम की जगह ली थी। वर्ष 1957 में ब्रिटेन से आजादी के बाद यह पहला मौका है जब मलेशिया में किसी राजा ने राजगद्दी छोड़ी हो।

मलेशिया एक संवैधानिक राजतंत्र है जहां हर पांच साल में राजा बदलते हैं। इसके तहत मलेशिया के नौ राज्यों में बारी-बारी से पांच साल के लिए वहां के राजपरिवारों से राजा चुना जाता है। इस प्रणाली के तहत अब्दुल्ला देश के 16वें राजा बने थे।

न्यू स्ट्रेट्स टाइम्स के अनुसार 1 जुलाई को दोनों का तलाक हो गया और तलाक को चुपचाप दर्ज कर दिया गया था। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक जैसे ही इस दंपति को बच्चा पैदा हुआ उसके कुछ ही सप्ताह बाद सुल्तान ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। रिपोर्ट के मुताबिक सिंगापुर में यह तलाक पंजीकृत किया गया। सुल्तान का कहना है कि वो रिहाना के बच्चे के पिता नहीं हैं।

रिहाना का भावुक पोस्ट : तलाक की वजह सामने आने के बाद रिहाना ने सोशल मीडिया पर अपनी और बेटे की दो तस्वीरें शेयर कर एक भावुक पोस्ट लिखा है। रिहाना ने लिखा, 'ये पोस्ट लिखते समय मेरी आंखों में आंसू हैं, मेरे बेटे। रिहाना ने आगे लिखा कि मैंने अपनी जिंदगी में बहुत दुःख, धोखे और ईर्ष्या देखी है, लेकिन इस दुनिया में अच्छे लोग भी हैं और मैं तुम्हें जिंदगी की सारी खुशियां दूंगी।

लोकतंत्र की महाभारत का संजय

लाल किला

वेदव्यास

> आजादी की इस लोक यात्रा में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से लेकर समाजवाद तक और अब हिन्दू राष्ट्रवाद के आते-आते हमारा मन फिर भी यही कहता है कि विकास और परिवर्तन का एक मात्र रास्ता, हमारी सभ्यता और संस्कृति को, विश्व बंधुत्व में बदलने का यही है कि हम सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास पाने की एक ईमानदार राजनीति करें।

आजादी के 72 कदम चलने के साथ लाल किले ने प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू से लेकर प्रधान सेवक नरेन्द्र मोदी तक कई प्रधानमंत्री देखे और सुने हैं। क्योंकि लाल किला लोकतंत्र की महाभारत का संजय है जो हमारे समय, समाज और बदलते भारत का आंखों देखा हाल सुनाता है। हम भारत के लोग 1947 में 36 करोड़ थे और 2019 में आजादी के 72 कदम चलकर 134 करोड़ हो गए हैं, लेकिन लाल किला आज भी अपनी जगह स्थिर है और उस पर तिरंगा लहरा रहा है। इस तरह लाल किला हमारे संविधान का एक ऐसा मुकाम है जहां अपने समय की हर सरकार राष्ट्र ध्वज फहराती है और सपनों का भारत बनाती है। इस लाल किले पर सबसे अधिक 17 साल तक जवाहर लाल नेहरू ने जनता से जय हिन्द के नारे लगवाए, शांति के कबूतर उड़ाए और आजादी ने अपने दिखाए हैं। लेकिन एक बात ऐसी है जो आज तक नहीं बदली है और वो ये कि लाल किले की प्राचीर पर चढ़ने से पहले सभी महानायकों ने राजघाट जाकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर फूल भी जरूर चढ़ाए हैं।

लाल किला जहां आज हमारी आजादी का दूसरा नाम है, उसी तरह महात्मा गांधी भी हमारी प्रेरणा और आदर्श का एक दूसरा नाम हैं तो भीमराव अम्बेडकर भी हमारे लोकतंत्र और संविधान का ही एक दूसरा नाम हैं। मैं भी इस लाल किले को 1947 से सुन रहा हूं और देख-समझ भी रहा हूं। लेकिन मुझे लगता है कि अब देश बदल रहा है, देश के नारे बदल रहे हैं, देश के नागरिक बदल रहे हैं, देश के विचार बदल रहे हैं। इसके साथ-साथ हम भारत के लोगों के भूत, भविष्य तथा वर्तमान भी बदल रहे हैं। किन्तु एक बात ऐसी भी है और वो ये है कि प्रत्येक प्रधानमंत्री लाल किले पर चढ़कर भारत के युवा-नौजवानों को कभी नहीं भूले हैं।

लाल किला मुझे आज भी एक खूबसूरत भारत का सपना इसलिए भी लगता है कि चाहे महात्मा गांधी, नेहरू और अम्बेडकर आज हमारे बीच में नहीं है लेकिन स्वतंत्रता संग्राम का 200 वर्ष का इतिहास पीढ़ी-दर-पीढ़ी आज भी हमें जवाहर लाल नेहरू की ये बात याद दिला रहा है कि शान से हमने हिन्दुस्तान को आजाद किया, शान से हमें आगे बढ़ना है। शान से हमें यह जो हिन्दुस्तान की आजादी की मशाल है उसे लेकर चलना है और जब हमारे हाथ कमजोर हो जाएं, तो औरों को देना है, ताकि नौजवान हाथ उसको उठाएं और हम अपना काम पूरा करके चाहे खाक में मिल जाएं। इसलिए हमें भी आज ये एक बात

कभी नहीं भूलनी है कि आजादी का अर्थ केवल एक आजादी है। यदि लोकतंत्र इस देश का धर्म है तो संविधान भी हू-ब-हू एक गीता, कुरान और बाइबिल ही है।

आजादी की इस लोक यात्रा में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से लेकर समाजवाद तक और अब हिन्दू राष्ट्रवाद के आते-आते हमारा मन फिर भी यही कहता है कि विकास और परिवर्तन का एक मात्र रास्ता, हमारी सभ्यता और संस्कृति को, विश्व बंधुत्व में बदलने का यही है कि हम सबका साथ-सबका विकास और सबका विश्वास पाने की एक ईमानदार राजनीति करें। धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्रीयता की संकीर्णता और कट्टरता को लेकर आतंक, उग्रता और अलगाव की बातें न करें। क्योंकि 'हे राम' से लेकर 'जय श्रीराम' तक की रथ यात्राओं ने हमारी आजादी और लोकतंत्र को हिंसा, गैर बराबरी और सामाजिक, आर्थिक दुराचरण में अधिक बदला है। भारत की आजादी के इस अडिग गवाह लाल किले ने अपनी आंखों से भारत का विभाजन देखा है ? महात्मा गांधी की साम्प्रदायिक हत्या देखी है ? आम्बेडकर की जातीय उपेक्षा देखी है ? जवाहर लाल नेहरू द्वारा भारत की खोज का तिरस्कार देखा है ? आपातकाल का घोर अंधेरा देखा है ? धर्म के नाम पर बाबरी मस्जिद की शहादत देखी है ? दिल्ली के सिक्ख विरोधी दंगे देखे हैं तो गुजरात की साम्प्रदायिक आग की तपन भी भुगती है ? और न जाने कितने तरह के हिन्दुस्तान बनते-बिगड़ते देखे हैं। लेकिन लाल किला आज भी मुझे ये एक बात याद दिला रहा है कि 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा।' भारत की आजादी का ये पावन पर्व मनाते हुए हमें एक बार अब फिर ये सोचना चाहिए कि आज भी हम गरीबी, निरक्षरता, कुपोषण, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और गैर बराबरी के नरक में क्यों फंसे हुए हैं ? और ज्ञान विज्ञान के चन्द्रयान बनाकर भी एकता से अनेकता की ओर क्यों जा रहे हैं ? जवाहर लाल नेहरू ने आजादी से पहले ही 1940 में 'हिन्दुस्तान की समस्याएं' पुस्तक लिखकर जिस भारत माता की दारुण कथा बताई थी। वह आज भी 2019 में हमारी चुनौती बनकर क्यों खड़ा है ? ऐसे में आज की संकीर्ण और दलगत राजनीति से बचकर हमें लोकतंत्र के सपनों को साकार करने के लिए समाज और अपने भविष्य को, धर्म और जाति की पहचान के चक्रव्यूह से बचाना चाहिए। क्योंकि 72 साल बाद भी हम आज अपनी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यवस्था को महात्मा गांधी, आम्बेडकर, नेहरू, पटेल, भगत सिंह जैसे राष्ट्र निर्माताओं के सपनों का भारत नहीं बना पाए हैं। लाल किला इसीलिए हमें फिर आज ये कह रहा है कि भारत की आत्मा तो गांव, गरीब और गांधी में बसती है। इसलिए पहले यह समझो कि आखिर यह मुल्क (देश) क्या है ?

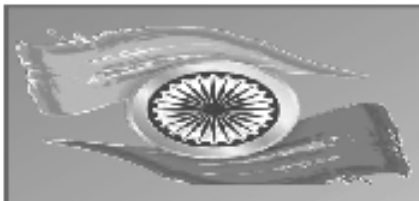

स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

दी बांसवाड़ा सेन्ट्रल
को-ऑपरेटिव बैंक लि.

प्रधान कार्यालय, कॉलेज रोड,
बांसवाड़ा - 327001

दूरभाषः 02962-242973, 243784 फैक्सः 02962-241375
वेबसाइटः- www.banswaraccb.com ई-मेलः- ccb_banswara@ymail.com

शिक्षा, शिक्षक और समाज

अगर नदी ही सूखी है, या उसमें तैरने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है तो कोई कैसे तैरना सीख पाएगा? शिक्षक बनने के लिए पूर्व सेवाकालीन शिक्षक-प्रशिक्षण का ढांचा ही पूरी तरह चरमराया हुआ है। शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों-महाविद्यालयों की बाढ़ सी आई हुई है। राज्य सरकारें आंख मीच कर इन संस्थाओं की निजी क्षेत्र में स्वीकृतियां जारी कर रही हैं।

✍ विष्णु शर्मा हितैषी

भारत में गुरु शिष्य परम्परा बहुत पुरानी है, भगवान श्रीकृष्ण की गुरुकुल कथाओं से लेकर आज के हाइटेक जीवन में भी शिक्षकों की महत्ता सब ओर दिखाईदेती है। गुरु और शिष्य का रिश्ता इस देश की परम्परा में आबद्ध है। यहां गुरु अपना ज्ञान शिष्य को देता है, तो शिष्य भी गुरु दक्षिणा देकर गुरु का ऋण चुकाने की परम्परा का निर्वाह करता है। गुरु द्रोणाचार्य के बिना अर्जुन निष्णात धनुर्धर कैसे बन पाता? रामकृष्ण परमहंस न होते तो भारत के ज्ञान और संस्कारों का वैश्विक महानाद करने वाले विवेकानंद को सही दिशा कौन देता? अतएव शिक्षक का दर्जा समाज में बड़ा ही सम्माननीय तथा उच्च माना गया है। वह नैतिकता व आदर्शों का प्रेरणा स्रोत तथा जीवन-मूल्यों के सतत् नियामक रूप में भी जाना गया है। शिक्षक के रूप में एक विनयशील, अनुशासनबद्ध और आदर्श जीवन पर चलने वाले व्यक्ति को मान्य किया गया है तथा उसे समाज, राष्ट्र तथा मानव जीवन की सभी नैतिक जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। दूसरी तरफ आज अभिभावकों के पास समय नहीं है। वे जीविकोपार्जन के अलावा अन्य बातों में इतना उलझ गए हैं कि भौतिकता की आंधी को तो स्वीकार कर रहे हैं लेकिन ज्ञान के उजाले के प्रति उपेक्षा से भर गए हैं। वे दिन रात के चौबीस घंटों में से थोड़ा समय भी अपने बालक के योगक्षेम के लिए नहीं दे पा रहे हैं। स्कूल और शिक्षक पर भरोसे के बावजूद अभिभावकों को अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई और उनके सुखद् भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए कुछ समय तो देना ही चाहिए। गृहस्थी, समृद्धि और संस्कार में उन्हें तालमेल बिठाना होगा।

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् (पूर्व राष्ट्रपति) के जन्म दिवस (5 सितम्बर) को हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं, वे कहते थे कि 'हम भाग्यशाली हैं कि स्वतंत्र भारत में रह रहे हैं, जिसे अपने विकास के लिए हर उस सक्षम नागरिक की जरूरत है, जो इस देश की सेवा बिना किसी व्यक्तिगत लोभ-लालच से कर सके। मैं यह जानता हूं कि यह कहना बहुत आसान है कि कर्म ही पुरस्कार है, मगर जो परिश्रम करते हैं, उन्हें इतना जरूर मिलना चाहिए कि वे जीवित रह सकें। उनका काम सन्तोषप्रद है, तो उन्हें आरामदेह जीवन मिलना ही चाहिए।'

भौतिक सुख सुविधाएं समाज के दूसरे क्षेत्र के लोग तो ले लें, पर शिक्षक सादगी का लेबल अपने पर चस्पा किए अभावों की जिंदगी ही जीता रहे, यह दोयम दर्जे की मानसिकता समाज के लिए हितकारी नहीं है। समय में बदलाव के साथ विद्यार्थियों के रवैये में भी परिवर्तन हो गया है। बिना गुरु के ज्ञान नहीं मिल सकता। इस बात को अब वे मानने को तैयार दिखाई नहीं देते। प्राथमिक स्कूल का अध्यापक हो, माध्यमिक स्कूल का व्याख्याता हो अथवा

उच्च शिक्षा का प्राध्यापक, हर जगह उन्हें नीचा देखना पड़ता है। शिक्षण संस्थाओं और समाज में अनुशासन, शिक्षा तथा शिक्षक के प्रति समर्पण के भाव तिरोहित हो चले हैं। इन हालातों के लिए शिक्षा का राजनीति और व्यावसायीकरण जिम्मेदार है। छोटी-छोटी बातों पर स्कूल, कॉलेज बंद कराना, हड़ताल और विश्वविद्यालयों में छात्रसंघ चुनावों के दौरान के परिदृश्य एक सभ्य समाज पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। इसके लिए न शिक्षक जिम्मेदार हैं और न छात्र। शैक्षिक संस्थाओं में अनुचित बाहरी हस्तक्षेप ही इसका बड़ा कारण है। इसके साथ ही शिक्षकों और खासकर स्कूली शिक्षकों के प्रति समाज से लेकर सरकार तक के बीच एक हेय नजरिया कायम है। शिक्षा प्रबंधन को संचालित करने वाले प्रशासनिक तंत्र का भी सोच यही है कि शिक्षक पढ़ाते नहीं हैं। शिक्षा प्रबंधन से सम्बद्ध प्रशासनिक अधिकारी जब स्कूलों में जाते हैं तो उनका मात्र उद्देश्य रहता है, शिक्षकों, विद्यार्थियों व वहां की व्यवस्थाओं में मीन मेख निकालना। जबकि उन्हें वहां इस संकल्प के साथ जाना चाहिए कि वे अच्छे काम की प्रशंसा करेंगे और शैक्षिक स्तर के उन्नयन में अपने स्तर पर जितना भी सहयोग कर सकेंगे, करेंगे। अगर नदी ही सूखी है, या उसमें तैरने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है तो कोई कैसे तैरना सीख पाएगा ? शिक्षक बनने के लिए पूर्व सेवाकालीन शिक्षक-प्रशिक्षण का ढांचा पूरी तरह चरमराया हुआ है। शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों महाविद्यालयों की बाढ़ सी आई हुई है। राज्य सरकारें, आंख मीच कर निजी क्षेत्र में स्वीकृतियां जारी कर रही हैं, जहां न साधन है, न

> कोई भी शिक्षक अपने छात्रों को तब तक प्रोत्साहित नहीं कर सकता या उनका सम्मान नहीं पा सकता, जब तक कि वह खुद ज्ञान की सीमाओं का विस्तार करने में रुचि नहीं रखता। छात्रों को पढ़ाना खुद के पढ़ने जैसा ही है। हम शिक्षकों से यह उम्मीद करते हैं कि वे ऐसे नागरिक तैयार करें, जो घृणा, द्वेष, आलस्य, अविश्वास और वर्चस्व की भावना से दूर हों। ये बुराइयां हमारी राष्ट्रीय ताकत को कमजोर बनाती हैं।
>
> – डॉ. एस. राधाकृष्णन्

सुविधाएं। न समृद्ध पुस्तकालय है और न ही पढ़ाने वाले पर्याप्त और अनुभवी शिक्षक। छात्राध्यापकों को भी बस डिग्री से मतलब है जो उन्हें प्रशिक्षण की अवधि समाप्त होते ही मिल जाती है। इन्हें इस बात से भी कोई सरोकार नहीं रहता कि जिस प्रशिक्षण के लिए वे समय और मुश्किल से जुटाया पैसा खर्च करने के साथ अपना भविष्य बनाने और देश को अपनी योग्यता और प्रतिभा से महकाने वाली भावी नागरिकों की पौध को सींचने आए हैं, उनकी जरा सी भी कोताही कितना बड़ा नुकसान कर सकती है। लेकिन बढ़ती बेरोजगारी के माहौल में उन्हें अपने मतलब के आगे कुछ दिखाई नहीं देता। यह उनका दोष भी नहीं है। यह हमारे नीति नियामकों की भूल है, जिसकी सजा के ये मोहरे मात्र हैं।

कॉलेजों के छात्रसंघों के चुनाव में जो हालात दिखाईदेते हैं, क्या उसके लिए केवल शिक्षक या छात्र ही जिम्मेदार हैं ? इसका जिम्मेदार राज्य सरकारों का उच्च शिक्षा तंत्र है। शिक्षकों को प्रशिक्षण के जरिए जैसा तैयार किया जाएगा, वैसा ही कमोबेश वे स्कूलों में प्रदर्शित करेंगे। स्कूलों में आज भी सदियों पुरानी रटंत प्रणाली हावी है। स्कूलों में प्रयोगशालाएं और पुस्तकालय दम तोड़ते दिखाई दे रहे हैं शिक्षकों की भारी कमी है। दरअसल शिक्षा को लेकर देश की आजादी के बाद कई प्रयोग हो चुके, कई योजनाएं बनीं, लेकिन आज भी वह संवैधानिक मूल्यों को पोषित करने वाली नहीं बन पाई है, तदर्थ समाज के हर तबके को इस पर विचार करना होगा। विशेषकर देश के नीति-निर्धारकों और शिक्षा को दिशा देने वाली तथाकथित बड़ी संस्थाओं और उनमें पदारूढ़ लोगों को।

पाठक-पीठ

'प्रत्यूष' का माह अगस्त का अंक आगामी तीज-त्योहारों की जानकारी व नवीन राजनैतिक घटनाक्रमों पर सारगर्भित टिप्पणियों के साथ देखने को मिला। जन्माष्टमी के परिप्रेक्ष्य में 'कान्हा का प्रेमराग' व राजनैतिक परिदृश्य की दृष्टि से तृणमूल कांग्रेस का केन्द्र के साथ अनुचित टकराव पर आलेख मन पर असर डालने वाले थे।

– शान्ति लाल जैन, जलगांव

अगस्त अंक के सम्पादकीय की सातवीं पंक्ति में लिखा गया था कि 'कांग्रेस की कमान गांधी परिवार के हाथों से छूटने पर पार्टी में बिखराव की स्थिति पैदा हो सकती है। कांग्रेस सूत्रों की मानें तो राहुल गांधी को मना लिया जाएगा(23वीं पंक्ति)।' यही स्थिति 10 अगस्त को पार्टी की बैठक में स्पष्ट हुई। राहुल गांधी नहीं माने तो अध्यक्ष पद सोनियाजी को हस्तांतरित हो गया। कांग्रेस और गांधी परिवार परस्पर पूरक ही हैं।

– एन. के. पुरोहित, उत्तरसांडो

अन्तर्राष्ट्रीय अदालत ने कुल भूषण जाधव की पाकिस्तान द्वारा घोषित फांसी की सजा पर रोक लगा कर कड़ा झटका दिया। इस फैसले के 18 दिन बाद ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाकर उसकी कमर ही तोड़ दी। 70 साल पहले हुई भूल का सुधार। जाधव पर लिखा गया आलेख अच्छा लगा।

– निर्मल जैन, समदड़ी

'प्रत्यूष' मुझे नियमित रूप से मिल रही है। राजनैतिक आलेखों में शिक्षा एवं साहित्य, कला, संस्कृति से सम्बद्ध जानकारियां इसकी विशेषता है। हिमादास पर कवर पेज देकर खेल-खिलाड़ी को भी प्रोत्साहित किया गया है।

- जितेन्द्र वाणावत, अजमेर

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

संतान से वंचित करते ग्रहयोग

पिछले दो अंक से जारी ज्योर्तिविद् पं. दयानंद शास्त्री के आलेख की समापन किश्त प्रस्तुत है। इस में भी वे सन्तानोत्पत्ति में बाधक ग्रहयोग और उनके निवारण की चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक जीवात्मा अपने पूर्वजन्म के कर्मानुसार 84 लाख योनियों में से किसी एक में जब नवजीवन धारण करती है, तब ग्रह-नक्षत्रों की जो स्थिति होती है, वही उसका जन्मांक अथवा कुण्डली तय करते हैं। जन्मांक ही उसके भावी भविष्य को बताते हैं। वे यह भी बताते हैं कि उस जातक को संतान की प्राप्ति होगी अथवा नहीं। यदि नहीं तो संभावित उपाय ज्योतिष के अनुसार क्या हों।

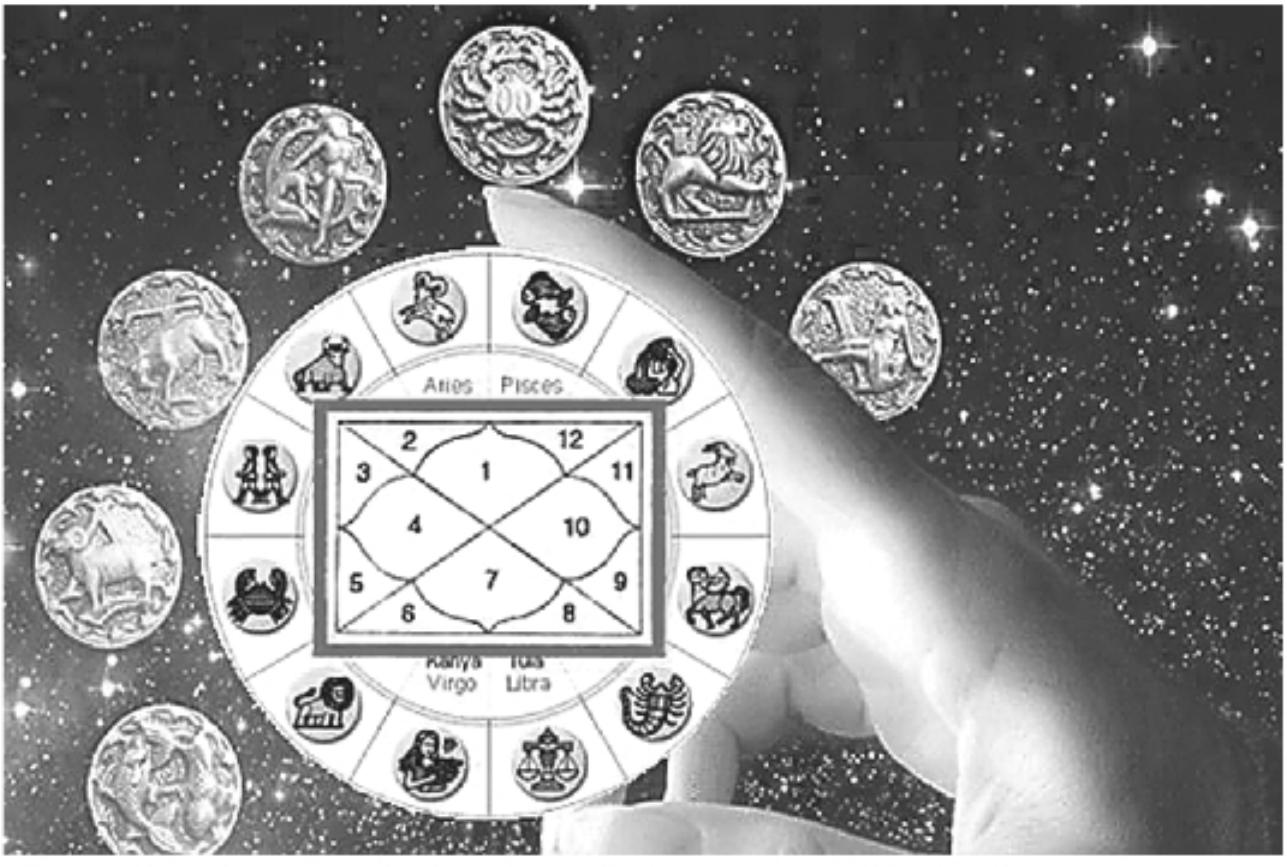

दूसरा, पांचवां तथा सातवां भावेश पाप राशि में पापयुक्त होकर स्थित हों अथवा इनके नवांशेश पापराशि के नवांश में पापयुक्त हों। द्वादशेश का नवांशेश अष्टम में हो और पंचमेश क्रूर षष्ठ्यंश में हो, पहला और पांचवां भावेश छठे, आठवें या 12वें में हों, गुरु नीचगत हो और पंचम में कोई नपुंसक ग्रह (बुध, शनि) हो। गुरु क्रूर षष्ठ्यंश में, पंचमेश अष्टम में व अष्टमेश पंचम में हो। उपर्युक्त योगों में दम्पत्ती संतान से वंचित रहते हैं। इस प्रकार के योगों में उक्त ग्रहों की शांति की जानी चाहिए।

संतानहीनता के अन्य योग

चतुर्थ भाव में पाप ग्रह, सप्तम भाव में शुक्र तथा दशम भाव में चन्द्रमा का होना वंश नाशक योग माना गया है। यदि पंचमेश कमजोर, पंचम में लग्नेश, चतुर्थ में चन्द्रमा व लग्न में कोई पाप ग्रह हो तो वंश नाश होता है। पंचम भाव में गुरु के साथ चन्द्रमा हो तथा चतुर्थ, अष्टम, व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो और सप्तम भाव में बुध व शुक्र हो तो भी संतान की प्राप्ति नहीं होती। यदि पहले भाव का स्वामी मंगल की किसी राशि में हो, पंचमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तथा लग्नेश किसी पापी ग्रह के साथ हो तो पुत्र की मृत्यु होती है। यदि पंचम भाव का स्वामी लग्न में अथवा सप्तम भाव में बली षष्ठेश के साथ हो तो संतान की अकाल मृत्यु होती है। यदि लग्न में सूर्य और पंचम में मंगल हो तो पुत्र जन्म की उम्मीद नहीं की जा सकती। लग्न से, चंद्र से तथा गुरु से पंचम स्थान पाप ग्रह से युक्त हो और वहाँ कोई शुभ ग्रह न बैठा हो अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि न हो। लग्न चंद्र तथा गुरु से पंचम स्थान का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हो। यदि पंचमेश पाप ग्रह होते हुए पंचम में हो तो पुत्र की प्राप्ति होगी किन्तु शुभ ग्रह पंचमेश होकर पंचम में बैठ जाएं और

साथ में कोई पाप ग्रह हो तो वह संतान बाधक बनेगा। यदि पंचम भाव में वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि हो और पंचम भाव में सूर्य, आठवें भाव में शनि तथा लग्न में मंगल स्थित हो तो संतान होने में दिक्कत या विलंब होता है। लग्न में दो या दो से अधिक पाप ग्रह हों तथा गुरु से पांचवें स्थान पर भी पाप ग्रह हो तथा ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी संतान होने में विलंब होता है। प्रथम, पंचम, अष्टम एवं द्वादश। इन चारों भावों में अशुभ ग्रह हो तो वंश वृद्धि में दिक्कत होती है। चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रह, सातवें में शुक्र तथा दसवें में चन्द्रमा हो तो भी वंश वृद्धि के लिए बाधक है। पंचम भाव में चंद्रमा तथा लग्न, अष्टम तथा द्वादश भाव में पाप ग्रह हो तो भी वंश नहीं चलता। पंचम में गुरु, सातवें भाव में बुध- शुक्र तथा चतुर्थ भाव में क्रूर ग्रह होना संतान बाधक है जब लग्न में पाप ग्रह, लग्नेश पंचम में, पंचमेश तृतीय भाव में हो तथा चन्द्रमा चौथे भाव में हो तो संतान नहीं होती। जब पंचम भाव में मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो। इनि वहं बैठा हो या शनि की दृष्टि पांचवें भाव पर हो तो संतान प्राप्ति में समस्या होती है। जब षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश पंचम भाव में हो या पंचमेश 6-8-12 भाव में बैठा हो या पंचमेश नीच राशि में हो या अस्त हो तो वह संतान बाधायोग हो है। पंचम में गुरु यदि स्वयं राशि का हो तो बड़ी परेशानी के बाद संतान की प्राप्ति होती है। पंचम भाव में गुरु कर्क या कुंभ राशि का हो और गुरु पर कोई शुभ दृष्टि नहीं हो तो प्रायः संतान का अभाव ही रहता है। तृतीयेश यदि 1-3-5-9 भाव में बिना किसी शुभ योग के हो तो संतान होने में रुकावट पैदा करते हैं। लग्नेश, पंचमेश, सप्तमेश एवं गुरु सब के सब दुर्बल हों, पंचम भाव में पाप ग्रह, पंचमेश नीच राशि में बिना किसी शुभ दृष्टि के हो, यदि सभी पाप ग्रह चतुर्थ में बैठे हो, चंद्रमा और गुरु दोनों लग्न में हों तथा मंगल और शनि दोनों की दृष्टि लग्न पर हो तो भी संतान की प्राप्ति नहीं होती। जब गुरु दो पाप ग्रहों से घिरा हो और पंचमेश निर्बल हो तथा शुभ ग्रह की दृष्टि या स्थिति न हो तो जातक को संतान होने में दिक्कत होती है। जब दशम में चंद्र, सप्तम में राहु तथा चतुर्थ में पाप ग्रह हो तथा लग्नेश बुध के साथ हो, पंचम, अष्टम, द्वादश तीनों स्थान में पाप ग्रह बैठे हों, बुध एवं शुक्र सप्तम में, गुरु पंचम में तथा चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो एवं चंद्र से अष्टम भाव में भी पाप ग्रह हो तो पुत्र जन्म नहीं होता। यदि चंद्र पंचम हो एवं सभी पाप ग्रह 1-7-12 या 1 8 12 भाव में हों, पंचम भाव में तीन या अधिक पाप ग्रह बैठे हों और उनपर कोई शुभ दृष्टि नहीं हो तथा पंचम भाव पाप राशिगत हो तो भी संतान नहीं होती। यदि 1-7-12 भाव में पाप ग्रह शत्रु राशि में हों तो पुत्र होने में दिक्कत होती है। लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य हो तो यत्न करने पर ही पुत्र प्राप्ति होती है। यदि तीसरे भाव का मालिक और चन्द्रमा यदि 1, 4, 6, 8,10,12 वें भाव में हो तो संतान नहीं होती। यदि पांचवें भाव में शनि या मंगल सिंह राशि में हो तथा पांचवें भाव का स्वामी आठवें भाव में गया हो तो संतान होने में परेशानी होती है। यदि लग्नेश और बुध चौथे, सातवें या दसवें भाव में हो तो संतान बाधा होती है। पंचम में केतु हो और किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो संतान होने में परेशानी होती है। यदि पति पत्नी दोनों के जन्मकालीन शनि तुला राशिगत हो तो संतान प्राप्ति में समस्या होती है।

बाधा निवारण के उपाय

यदि संतान सुख में बुध और शुक्र बाधक हों तो शिवपूजन करें।

गुरु चंद्रकृत दोष हो तो मंत्र, यंत्र और औषधि का प्रयोग करें।

राहु बाधक हो तो कन्यादान करें। सूर्य का दोष हो तो विष्णु सहस्रनाम का जप या हरिवंश पुराण का श्रवण करें

षष्ठी देवी का जप पूजन एवं स्तोत्र पाठ आदि का अनुष्ठान सुयोग्य पुत्र संतान देने में सहायक होता है।

संतान गोपाल यंत्र ॐ क्लीं ॐ क्लीं देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं क्लीं क्लीं ॐ का जप एवं संतान गोपाल स्तोत्र का नियमित पाठ भी संतानं सुख प्रदान करने वाला है।

इसके अतिरिक्त भगवान शिव की आराधना एवं जप, पूजन, अनुष्ठान, कन्यादान, गौदान एवं अन्य यंत्र तंत्र तथा औषधियां अपनाने से भी संतति सुख प्राप्त किया जा सकता है।

गुरु, माता-पिता, ब्राह्मण, गाय आदि की सेवा, पुण्य, दान, यज्ञ आदि संतानहीनता को मिटाने वाले हैं।

नवरात्रि में 'सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भवि ष्यति न संशयः।।' इस मंत्र से दुर्गा सप्तशती का नवचंडी या शतचंडी पाठ का अनुष्ठान भी संतान सुख देता है।

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

विकास के पथ में परिश्रम की महक है,
यही तो माँ भारती का अनुपम श्रृंगार है।
गरीब-अमीर बनें नए हिंद की भुजाएं,
बदलते भारत की यही तो पुकार है।
देश पहले भी चला और आगे भी बढ़ा,
अब न्यू इंडिया दौड़ने को बेताब है,
दौड़ना ही तो न्यू इंडिया का सरोकार है।

'देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले
असंख्य स्वतंत्रता सैनानियों को हर देशवासी नमन करता है'

जय हिंद

73वां
स्वतंत्रता दिवस
15 अगस्त 2019

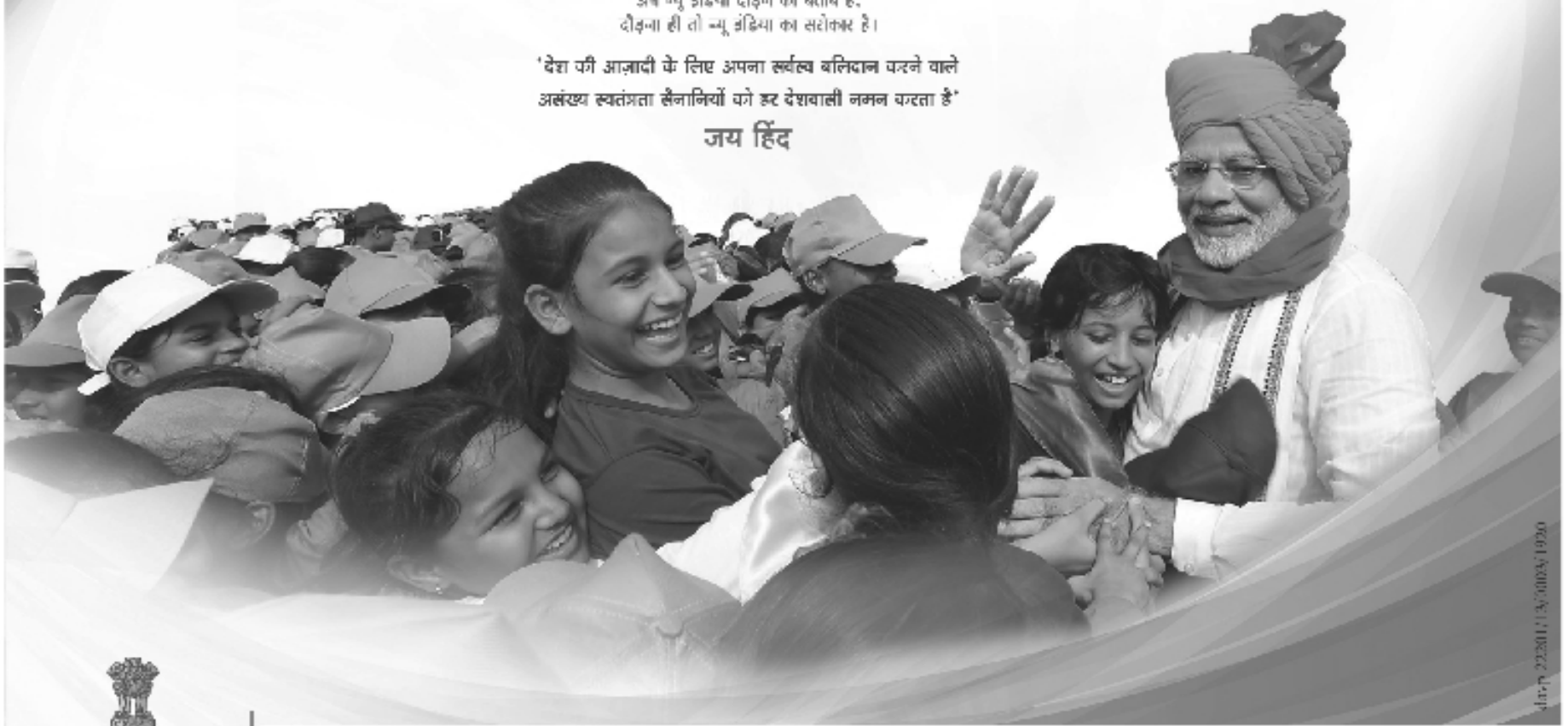

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस समारोह का प्रातः **6:25** बजे से दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

सोहगीबरवा में रुद्राक्ष की दुर्लभ प्रजाति

✍ पं. शोभालाल शर्मा

रुद्राक्ष को भारत-नेपाल सीमा की तराई रास आ रही है। यूपी के महाराजगंज जिले में स्थित सोहगीबरवा अभयारण्य में दुर्लभ प्रजाति के रुद्राक्ष का छोटा-मोटा जंगल मिला है। दुर्लभ वृक्षों की गणना के दौरान चार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में रुद्राक्ष के 12[illegible] पेड़ मिले।

यह क्षेत्र नेपाल से सटी नारायणी नदी के पास है। रुद्राक्ष के पेड़ों की यह संख्या वन विभाग के लिए भी अचरज भरी मगर सुखद है। धार्मिक और औषधीय दोनों तरह से नेपाल का रुद्राक्ष बेहतर माना जाता है। यहां मिले ये पेड़ इसी नेपाली प्रजाति के हैं। वन विभाग पहली बार इस अभयारण्य में दुर्लभ वृक्षों की गणना कर रहा है, जहां रुद्राक्ष के पेड़ मिले। जिला वन अधिकारी मनीष सिंह ने बताया कि सोहगीबरवा वन्य जीव प्रभाग में इस बार वन्य जीवों के साथ ही दुर्लभ वृक्षों की भी गणना की गई। दोनों ही मामलों में सुखद संदेश मिले। यहां बाघ की मौजूदगी मिली थी।

वाल्मीकि नगर टाइगर रिजर्व से सटे रेंज में सात बाघ विचरण करते हुए ट्रैप कैमरे में कैद भी हुए थे। यहीं से सोहगीबरवा में प्रोजेक्ट टाइगर परियोजना परवान चढ़ी। दुर्लभ रुद्राक्ष के पेड़ मिलने से सोहगीबरवा अभयारण्य और भी समृद्ध हुआ है।

औषधीय लिहाज से भी बेहद महत्वपूर्ण

आयुर्वेदाचार्य जगत देव दास बताते हैं कि रुद्राक्ष की प्रकृति गर्म और तर है। यह नीम के समान कृमिनाशक और ओजप्रद है। रुद्राक्ष उच्च रक्तचाप और मिर्गी में अत्यंत लाभदायक है। चरक संहिता में औषधि के रूप में उपयोग का उल्लेख मिलता है। क्षयरोग, चर्मरोग, कुष्ठरोग और कैंसर में भी लाभकारी होता है।

भारत में 25 प्रजातियां

विश्व में रुद्राक्ष की 123 प्रजातियां होती हैं जिनमें 25 भारत में पाई जाती हैं। भारत में रुद्राक्ष के पेड़ हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र, बिहार, असम, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, बंगाल के अलावा दक्षिण भारत में नीलगिरि, मैसूर व रामेश्वरम् में भी पाए जाते हैं।

चार रंग के रुद्राक्ष

रुद्राक्ष का पेड़ 50 से 200 फीट तक लम्बा होता है। इसके फल की गुठली के रूप में रुद्राक्ष मिलता है। रुद्राक्ष श्वेत, लाल, पीत और कृष्ण इन चार रंगों में प्राप्त होता है।

मान्यता : मान्यता है कि इसकी उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। इसीलिए यह शिव को प्रिय है और इसकी माला पहनने से मनुष्य को काल का भय नहीं रहता।

रासायनिक समीकरण : रुद्राक्ष में 50.024% कार्बन, 0.1461% नाइट्रोजन, 17.798% हाइड्रोजन और 30.4531% ऑक्सीजन होता है। ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा इसे विशेष बनाती है।

रुद्राक्ष और उसका महत्व

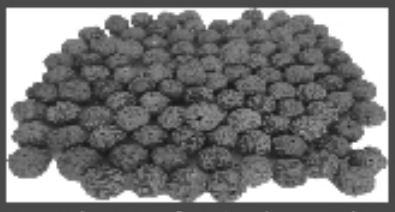

रुद्राक्ष के मुख : गोल, चिकने, दृढ़ कांटेदार तथा एक छिद्र से दूसरी तरफ छिद्र तक सीधी बारीक रेखा वाला रुद्राक्ष उत्तम गिना जाता है। जिसमें अपने आप छिद्र उत्पन्न हुआ हो वह उत्तम है। एक तरफ के छिद्र से दूसरे छिद्र तक जितनी सीधी रेखा जाती हो वह उतने ही मुख वाला माना जाता है।

एक रेखा वाला रुद्राक्ष एक मुखी है, जो शिवरूप है। वह मुक्ति देता है। दो मुखी शिव पार्वती रूप है, जो इच्छित फल देता है।

तीन मुख वाला रुद्राक्ष अग्निरूप है जो विद्या देता है

रुद्राक्ष पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, सिद्धिदायक तथा भोग मोक्ष देने वाले हैं। रुद्राक्ष जैसे ही फल भी होते हैं। रुद्राक्ष श्वेत, लाल, पीले तथा काले वर्ण वाले होते हैं। रुद्राक्ष फलप्रद हैं। जितने छोटे रुद्राक्ष होंगे उतने ही अधिक फलप्रद होंगे। ये अरिष्ट को दूर करके शांति देने वाले हैं।

रुद्राक्ष की माला धारण करने से पाप और रोग नष्ट होते हैं। साथ ही सिद्धि मिलती है। भिन्न-भिन्न अंगों में भिन्न-भिन्न संख्या वाले रुद्राक्ष धारण करने से लाभ होता है। शिव पुराण में इसका विस्तृत विवेचन है। भस्म, रुद्राक्ष धारण करके नमः शिवाय मंत्र का जाप करने वाला मनुष्य शिव रूप हो जाता है।

भस्म रुद्राक्षधारी मनुष्य को देखकर भूत प्रेत भाग जाते हैं, देवता पास में दौड़े आते हैं, उसके यहां लक्ष्मी और सरस्वती दोनों स्थायी निवास करती हैं सब देवता प्रसन्न होते हैं।

चार मुखी ब्रह्मरूप है, जो चतुर्विध फल देता है।

पंचमुखी रुद्राक्ष पंचमुखी शिवरूप है, जो सब पापों को नष्ट करता है छः मुखी रुद्राक्ष स्वामिकार्तिक रूप है, जो शत्रुओं का नाश करता है, पापनाशक है।

सात मुखी कामदेवरूप है, जो धन प्रदान करता है।

नौ मुखी कपिल मुनि रूप तथा नव दुर्गारूप है, जो मनुष्य को सर्वेश्वर बनाता है।

दशमुखी विष्णु रूप है, जो कामना पूर्ति करता है। ग्यारह मुखी एकादश रुद्ररूप है, जो विजयी बनाता है।

बारह मुखी द्वादश आदित्य रूप है, जो प्रकाशित करता है।

तेरह मुखी रुद्राक्ष विश्वरूप है, जो सौभाग्य मंगल देता है।

चौदह मुखी परमशिव रूप है, जो धारण करने से शांति देता है।

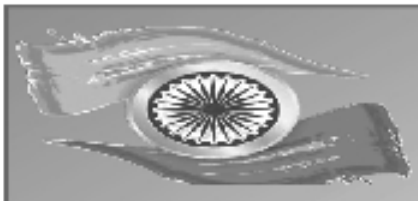

स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

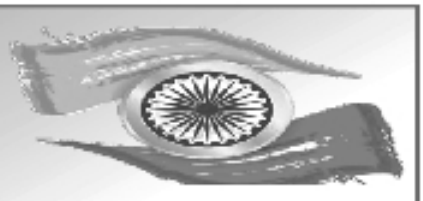

दी डूंगरपुर सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि.

प्रधान कार्यालय, न्यू कॉलोनी
डूंगरपुर - 314001

दूरभाषः 02964-232460
ई-मेलः- coopbankdungarpur@gmail.com

राजस्थान का अद्भुत नृत्य 'भवाई'

पन्नालाल मेघवाल

राजस्थान में पेशेवर लोक गायकों एवं लोक नृत्यकारों की परम्परागत जातियां पाई जाती हैं। मांड, भवाई, नट, सांसी, कंजर, कालबेलिया आदि ऐसे पेशेवर कलाकार हैं जो नृत्य गान के माध्यम से अपनी आजीविका कमाते हैं। इन कलाकारों के पास जो कला है, वह एक प्रकार से लोक कला का ही पेशेवर रूप है।

राजस्थान में पेशेवर लोक नृत्यों में 'भवाई' नृत्य अपनी उत्कृष्टता को लेकर अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। उदयपुर संभाग के एक क्षेत्र में इन नृत्यकारों के समूह बस गये थे, जिन्होंने एक जाति का रूप ले लिया और वे भवाई कहलाए। अन्य पेशेवर लोक कलाकारों की भांति इन भवाई नृत्यकारों ने किसी यजमानी प्रथा का सहारा नहीं लेकर अपने नृत्य को जनजागरण व मनोरंजन के लिए विकसित किया।

भवाई लोक कला में कोई कथानक जुड़े हैं तो केवल इसलिए कि इन्होंने अपनी कला में नृत्य-नाटिकाओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया। यह उनकी मनोरंजन के लिए नये आयाम ढूंढने की ललक का परिणाम है। भवाई नृत्य में विभिन्न शारीरिक करतब दिखाने पर अधिक जोर रहता है जिसमें शरीर का संतुलन दिखाने का प्रयास किया जाता है। इस कार्य में संतुलन के लिए साधना करने की महती आवश्यकता रहती है।

भवाई लोक नृत्य अपने स्वांगों के लिए प्रसिद्ध हैं। भवाई लोक कलाकार 36 कौमों के स्वांग धारण करते थे। इनके द्वारा किये जाने वाले स्वांगों में बोहरा-बोहरी, सूरदास, बाणिया, लोडी बड़ी, शंकरिया, कानगुजरी, बाघाजी, बीकाजी आदि प्रमुख थे। भवाई नाट्य का माध्यम गीत गद्य एवं नृत्य था। इनके नृत्य की मुख्य विशेषताएं नृत्य अदायगी, शारीरिक प्रक्रियाओं के अद्भुत चमत्कार तथा लयकारी की विविधता थी।

लोक कलाकार अपने अंगों की भंगिमाओं द्वारा नाना प्रकार के शारीरिक कौशल दिखाने में भी माहिर होते है। इन में गरुड़ जी का आसन, अडींगनाथ एवं पारसनाथ की मूरत, कछुआ, मछली, मगर, मोर, बन्दर एवं सूगरा बनाने की क्रीड़ाएं प्रमुख हैं। जमीन पर बैठकर अपने दोनों पांवों से सिर पर मटके रखने में भी ये लोग सिद्धहस्त होते हैं।

व्यंग्य विनोद एवं वाक् चातुर्य से ये कलाकार मौके पर ही दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देते हैं। अन्य फुटकर खेलों में कमल का फूल, मटका नाच, जलती हुई बोतल पर नाच, तलवारों पर नाच तथा तीन थोड़ नाच मुख्य है। इनमें कथ्य नहीं नृत्य ही प्रमुख होता है।

कमल के फूल में नृत्यकार ढोलक की तीव्र थापों पर चकरी खाता हुआ सतरंगी पगड़ियों को बिखेरकर कमल का फूल बनाता है। यह फूल डण्डी तथा पंखुड़ियों सहित होता है। लगभग आधे घण्टे तक नृत्यकार की जोरदार चकरी देख दांतों तले उंगली दबानी पड़ती थी। गरकों तथा जलती हुई बोतल पर नाच भी बड़ा कमाल का होता है।

पांवों के पन्जों से सिर पर मटके चढ़ाकर उठना-बैठना, चकरियां लेना तथा बैठकें लगाना आदि ऐसे करतब हैं जिन्हें भवाई कलाकार ही कर सकते हैं। तीन चोट में भाला, तलवार तथा बंदूक की तीनों चोटें एक साथ दिखाई जाती थीं। नृत्य करते हुए तलवार के म्यान पर ऊपर आकाश में भाला फेंकना, भाला फेंकते ही तुरन्त म्यान से तलवार निकालना और तुरन्त ही बन्दूक को दागकर ढोलक के सम पर पुनः भौला झेलना हर किसी के बस का काम नहीं है।

भवाई बचपन से ही यह कला सीख जाते हैं। उन्हें किसी प्रकार के विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। इनके प्रदर्शनों में स्त्रियां भाग नहीं लेती है। स्त्री पात्रों की भूमिका पुरुष ही निभाते हैं। स्त्री पात्रों की भूमिका निभाने वाले पुरुष बाल बड़े रखते हैं तथा नाच के अनुरूप ऐसे वस्त्राभूषण धारण करते हैं जिससे जनता यह समझ भी नहीं पाती कि यह पुरुष है अथवा स्त्री। दर्शक यही समझता है कि पुरुषों के साथ स्त्रियां भी नृत्य कर रही हैं

वस्तुत: पूर्व में भवाई गांवों में रहकर गांवों में ही अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। इसके पीछे उनकी जीविकोपार्जन जुड़ी थी लेकिन बदलते परिवेश में अब इस कार्य में अधिक आकर्षण नहीं रहने के कारण मूल भवाई इस कला को छोड़ते जा रहे हैं जबकि शहरों में इसे सीखा और सिखाया जा रहा है। और अब इसमें महिलाएं भी अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ रही हैं।

नि:शुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

नवरात्रि की
हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में नि:शुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),
उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

बढ़ते चलें
सत्य, अहिंसा के पथ पर...

इस पुनीत अवसर पर
हम सब सद्भावना, एकता, सत्य,
अहिंसा, शांति के मार्ग पर चल कर
प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ायें

73वां
स्वतंत्रता दिवस

सभी प्रदेशवासियों को
73 वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार

प्रणब दा, नानाजी व हजारिका 'भारत रत्न'

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन में 8 अगस्त को आयोजित एक समारोह में पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता और जाने-माने समाजसेवी रहे नानाजी देशमुख और असम के महान गायक भूपेन हजारिका को भी मरणोपरांत सम्मानित किया गया। यह सम्मान देशमुख की तरफ से दीनदयाल उपाध्याय रिसर्च इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष वीरेन्द्रजीत सिंह और हजारिका की तरफ से उनके बेटे तेज हजारिका ने लिया। मुखर्जी यह सम्मान पाने वाले पांचवें राष्ट्रपति हैं। उनसे पहले डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. एस. राधकृष्णन्, डॉ. जाकिर हुसैन और वीवी गिरी भी भारत रत्न से सम्मानित हो चुके हैं।

मोगरा व सिंघवी यूसीसीआई सलाहकार

के एस मोगरा

रमेश सिंघवी

उदयपुर। उदयपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की वर्ष 2019-2020 की कार्यकारिणी समिति की द्वितीय बैठक यूसीसीआई के अध्यक्ष रमेश कुमार सिंघवी की अध्यक्षता में हुई। जिसमें पूर्वाध्यक्ष के. एस. मोगरा एवं कार्यकारिणी सदस्य एन. के. सिंघवी को सर्वसम्मति से कार्यकारिणी का सलाहकार मनोनीत किया गया।

जिला कलक्टर श्रीमती आनन्दी को मिला बेस्ट कलक्टर का अवार्ड

उदयपुर। जयपुर में हुए राज्य स्तरीय स्वाधीनता दिवस समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उदयपुर कलक्टर आनंदी को बेस्ट कलेक्टर का अवार्ड दिया। कलेक्टर आनंदी को यह अवार्ड जिले में सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, नवाचारों से बालिका सशक्तिकरण, नरेगा और पीएम आवास योजना के जरिए जरूरतमंद वर्गों के विकास की योजनाओं को सफल बनाने सहित उदयपुर में शुरू किए चुप्पी तोड़ो-खुल कर बात करो अभियान, राज्य की पहली बकरी दूध डेयरी की स्थापना, आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए दिया है।

श्रीसीमेन्ट को 'इण्डस्ट्री चैंपियन अवार्ड'

जयपुर। श्रीसीमेन्ट लि. बांगड़ सिटी-रास को समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, इंटीग्रेटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री तथा भारद्वाज फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आर्य ग्रुप ऑफ कॉलेजेस परिसर में 'इण्डस्ट्री चैंपियन अवार्ड-2019' से गत दिनों सम्मानित किया गया। कम्पनी के उपाध्यक्ष सतीश माहेश्वरी व पुष्पेन्द्र भारद्वाज को डॉ. डी. पी. शर्मा व डॉ. के. एल. जैन ने सम्मानित किया। कार्यक्रम में चेयरमैन डॉ. अरविन्द अग्रवाल एवं पी. एम. भारद्वाज भी उपस्थित थे। इस सम्मान पर कम्पनी निदेशक पी. एन. छंगाणी, अध्यक्ष(वाणिज्यिक) संजय मेहता, संयुक्त अध्यक्ष अरविन्द खींचा आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

ईश्वर प्रदत्त है वेद : सारंगदेवोत

वेद सप्ताह का उद्घाटन करते डॉ. राजशेखर व्यास व कर्नल एस. एस. सारंगदेवोत।

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक साहित्य संस्थान तथा महर्षि संदीपन राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों सात दिवसीय वेद ज्ञान सप्ताह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. राजशेखर व्यास ने वेदों में सोमतत्व को बताते हुए राधा और कृष्ण के माध्यम से रस और बल को प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि वेदों से पहले ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई और वेदों को समझने के लिए इन ग्रंथों एवं उपनिषदों की समझ आवश्यक है। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कर्नल एस. एस. सारंगदेवोत ने वेदों की उत्पत्ति एवं रचना के बारे में कहा कि वैदिक मंत्रों की वास्तविक अनुभूति करना चाहिए। वेदों में सभी विषय समाहित हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. शक्तिकुमार शर्मा थे। मुख्य वक्ता डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी ने वेदों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रारंभ में निदेशक प्रो. जीवन सिंह खरकवाल ने अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ. अरविन्दर का मेडिकल कानून पर व्याख्यान

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ डॉ. अरविन्दर सिंह ने डायनटीज व इंडोक्राइन के छठे अधिवेशन पर मेडिकल कानून पर चिकित्सकों की जानकारी दी। यह अधिवेशन उदयपुर के डॉ. डी. सी. शर्मा द्वारा आयोजित किया गया तथा प्रदेश भर के चिकित्सकों ने इसमें भाग लिया। डॉ. सिंह ने बताया कि डॉक्टर्स के विरुद्ध हिंसा की वारदातें बढ़ी हैं जिसको ध्यान में रखते हुए मेडिकेयर प्रोटेक्शन एक्ट बनाया गया है जिसके तहत डॉक्टर्स व मेडिकल प्रतिष्ठान पर हमला करने पर तीन वर्ष की सजा व 50 हजार रुपए तक का जुर्माना होता है। सम्पत्ति को क्षति पहुंचाने पर दोगुनी कीमत की क्षतिपूर्ति करनी पड़ती है। डॉक्टर्स के संबंधित अन्य कानून और कंज्यूमर एक्ट की भी जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. अरविन्दर को सम्मानित किया गया।

आत्म जागरण का पर्व नवरात्रि

नवरात्रि की विधि और क्रियाओं के बीच मन में सहज ही यह प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' जिन्हें हम अत्यन्त भक्ति भाव से पूजते हैं उनका वास्तविक स्वरूप क्या है? और अतीत में कन्याओं ने ऐसा क्या किया, जिसकी स्मृति में आज भी उनके पूजन की परम्परा कायम है।

✍ राजयोगी ब्रह्मकुमार निकुंजजी

हिन्दू धर्म के मतानुसार सृष्टि रचना का आरंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था, हिन्दुओं का नया वर्ष इसी दिन से शुरू होता है, जिसका पूर्वार्द्ध आश्विन कृष्ण माह की अमावस्या को समाप्त होता है और उत्तरार्द्ध आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है, वर्ष के इन दोनों भागों के आरंभ में हमारे पूर्वज महाशक्ति की आराधना करते थे, इन्हीं दिनों सर्दी, गर्मी की प्रधान ऋतुओं का मिलन भी होता है, इसी संधि बेला को नवदुर्गा या नवरात्रि कहा जाता है। इस बार नवरात्रि घट की स्थापना 29 सितम्बर को होगी।

परम्पराओं के अनुसार इस त्योहार का प्रारंभ कलश स्थापना के साथ होता है और अखंड दीप जलाते हैं जो लगातार नौ दिन-रात जलता है, इन दिनों में कन्या-पूजन का भी महत्व है। जागरण उपवास एवं मां दुर्गा, काली, सरस्वती आदि का पूजन भी बड़े उमंग के साथ किया जाता है। इन सभी विधि और क्रियाओं के बीच मन में सहज ही यह प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' जिन्हें हम इतने भक्ति भाव से पूजते हैं, उनका वास्तविक स्वरूप क्या है ? और अतीत में कन्याओं ने ऐसा क्या कार्य किया था जिसकी स्मृति में आज तक नवरात्रि में उनका पूजन होता है ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए नवरात्रि से संबंधित तीन मुख्य प्रसंग सहायक सिद्ध हो सकते हैं, उनमें से एक आख्यान में यह कहा गया है कि पिछली चतुर्युगी के अंतिम चरण में जब विश्व-विनाश निकट था, तब 'मधु' और 'कैटभ' नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बंदी बनाया था और 'श्री नारायण' भी मोह निद्रा में थे। तब 'ब्रह्माजी' द्वारा प्रगटित 'आदि कन्या' ने नारायण को जगाया तथा 'मधु' व 'कैटभ' का नाश किया। दूसरे आख्यान में कहा गया है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित किया। त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रूप में जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया। तीसरे प्रसंग में कहा गया है कि सूर्य के वंश में 'शुंभ' और 'निशुंभ' नामक दो असुर पैदा हुए, उनके प्रधान कार्यकर्ता का नाम 'रक्तबीज', सेनापति का नाम 'धूम्रलोचन' और दो मुख्य सहायकों का नाम 'चंड' और 'मुंड' था। इस आख्यान के अनुसार शिवजी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उसके विकराल रूप से 'महाकाली' प्रगट हुई, जिसने इनका विनाश किया।

इन तीनों आख्यानों का वास्तविक भाव यह है कि विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रूपी रात्रि छाई हुई थी, तब राग(मधु) और द्वेष(कैटभ) तथा हिंसा(शुंभ और निशुंभ) ने उन सभी नर-नारियों को, जो सतयुग में दिव्यता संपन्न होने से देवी-देवता थे। परन्तु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आए थे, अपना बंदी बना रखा था। ऐसी धर्म-ग्लानि के समय परमात्मा ने कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रूपी शक्ति से सुसज्जित किया, जिसके कारण वे 'आदि शक्ति' कहलाई। इनके द्वारा दिए गए दिव्य ज्ञान के स्मृति स्वरूप नवरात्रियों के दौरान मां के नौ स्वरूपों की पूजा में 'कलश' एवं अखंड ज्योत की स्थापना के साथ की जाती है।

श्रद्धया इदं श्राद्धम्

✍ डॉ. आशुतोष झा

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से लेकर आश्विन कृष्ण के 16 दिन सनातन धर्मियों में पितरों के दिन माने जाते हैं। इस पक्ष में पितृलोक के द्वार खुल जाते हैं और पितृजन अपनी संततियों को देखने की लालसा के चलते पृथ्वी लोक का विचरण करते हैं। इस बार पितृपक्ष 13 से 28 सितम्बर तक रहेगा।

दुनिया के प्राय: सभी देशों व धर्मों में पूर्वजों को उनकी अपनी मान्यताओं के द्वारा पूजने के अपने-अपने तरीके हैं। हिन्दू धर्म में माता और पिता तथा मातृ-पितृ पूर्वजों को देवों से भी ऊंचा स्थान दिया गया है। धर्म ग्रंथों के अनुसार यदि संतान का हृदय अपने पूर्वजों के प्रति स्नेह से भरा हो तो ऐसी संतान की आराधना से देव प्रसन्न हो जाते हैं।

संतान का समूचा अस्तित्व माता-पिता से संभव हुआ है तथा संतान की प्रत्येक सांसें माता-पिता की ऋणी हैं। अत: केवल जीवित माता-पिता की सेवा ही नहीं अपितु मृत पूर्वजों की उपासना कर पितृ ऋण से शनै:-शनै: उऋण होने का उपक्रम ही श्राद्ध है।

वैदिक दर्शन मरणोपरांत जीवन और पूर्व जन्म की अवधारणा के साथ विकसित हुआ है और वह किसी योनि को भी प्राप्त कर सकता है। अत: इन पितृपक्ष के 16 दिनों में न केवल पूर्वज अपितु निराश्रितों, मित्रों तथा ब्रह्म से लेकर समस्त जीवों व योनिधारियों को जलदान करने का विधान है। जिसे कर्मकांड की भाषा में तर्पण कहा जाता है।

धर्मशास्त्र के कोई भी औपासनिक नियम तीन प्रकार के लोगों बच्चों, बीमार और अति वृद्धजनों पर लागू नहीं होते। अत: समस्त श्राद्धीय विधियों के संपादन का दायित्व भी स्वस्थ संतानों को और स्वस्थ प्रौढ़ व्यक्तियों का होता है। जिनके पिता जीवित हैं, उनके लिए पितृ कार्य निषिद्ध किया गया है।

श्राद्ध में श्रद्धा प्रधान तत्व है और श्राद्ध का उपलक्षण सहज भाविक श्रम है, इसलिए कहा गया है - 'श्रमेण श्रद्धया दीयते अनेत यत् तत् श्राद्धम' अर्थात् श्रमपूर्वक जुटाए गए साधनों के द्वारा श्रद्धापूर्वक पितरों की तृप्ति की भावना से विधियां अर्पित हों, वही श्राद्ध है।

वायुपुराण के अनुसार श्राद्धीय वस्तुएं पितरों को तृप्ति के रूप में प्राप्ति होती हैं। नाम, गोत्र मंत्र के द्वारा पितरों के निमित्त दी जाने वाली वस्तुएं संतृप्ति में परिवर्तित होकर पितरों को ठीक उसी प्रकार ढूंढ लेती हैं, जिस प्रकार बछड़ा अपनी मां को (वायुपुराण उपोद् घात 88/119)।

वैसे श्राद्ध में सामग्री प्रधान नहीं, श्रद्धा ही प्रधान है और इसीलिए कहा गया है कि जिसके पास कुछ भी सामग्री उपलब्ध न हो उसे अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाकर ऊंचे स्वर में कहना चाहिए कि 'सच्चे प्रयत्न के बावजूद मैं अपने पितरों के श्राद्ध की सामग्री जुटा पाने में समर्थ नहीं हो पाया, आप पितृजन मुझ पर प्रसन्न रहें।' ऐसा करने पर श्राद्ध संपन्न माना जाएगा।

वस्तुत: श्राद्ध केवल श्रद्धा पर आधारित है और श्राद्ध का कोई सुनिश्चित पैमाना अथवा मापदंड नहीं है। दानशीलता, परोपकार, श्रम और ममत्वभाव का प्रकाशन ही इसकी पहचान है। श्राद्ध के पूरे कर्मकांडों में पिता-माता पूर्वजों को सर्वोपरि मानने की अपील दिखाई पड़ती है। श्राद्ध परिवार को आगे की तीन पीढ़ियों को एक सूत्र से बांधे रखने का कार्य शताब्दियों से करता रहा है। श्राद्ध कर्ता मातृपक्ष व पितृपक्ष की न्यूनतम तीन पीढ़ियों को स्मरण कर जलदान करता है। जिसके कारण 50-100 वर्ष पूर्व के अपने परिवार और उसके फैलाव के विषय में उसे ज्ञान रहता है।

श्रमेण श्रद्धया दीयते, अनेत यत् तत् श्राद्धम्

[श्रमपूर्वक जुटाए गए साधनों का श्रद्धापूर्वक पितरों को तृप्ति के भावों से अर्पित किया जाना ही श्राद्ध है।]

श्राद्ध वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का पोषक है क्योंकि तर्पण न केवल ब्रह्माण्ड के सभी जीवों के लिए अपितु नदी, पर्वत, सागर, वनस्पति और औषधि के लिए भी जलदान अनिवार्य माना गया है। श्राद्ध का एक उद्देश्य श्वान, काक, चींटी आदि सहित अपने आसपास के पर्यावरण व जीवों की रक्षा हेतु प्रेरित किया जाना भी है। तर्पण के द्वारा हम पर्यावरण व जीवों के प्रति अपने दायित्व के लिए किंचित सजग भी हो जाते हैं। श्राद्ध पर व्यक्ति जिन परिस्थितियों में हो उसी के अनुरूप श्राद्ध कर्म संपन्न किया जाना चाहिए।

अयोध्या के राजा दशरथ के निधन पर सत्ताच्युत और सम्पत्ति व साधन विहीन वनगामी श्रीराम ने ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते चावल और जल के अभाव में वनप्रांत में इगुंदी(इमली) के गूदे से पिण्ड बनाकर पितृश्राद्ध संपन्न किया।

यदि श्राद्धकर्ता मार्ग में हो तो श्राद्धीय समय में केवल नाम, गोत्र उच्चारण कर जल छोड़ दें। तर्पण और जीवों को भोजनदान नित्य कर्म कहा गया है। किन्तु आधुनिक भाग-दौड़ से भरी जिंदगी व बदलते समय व परिवेश में प्रतिदिन जलदान व जीवों को भोजनदान करना संभव नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में पितृपक्ष में अवश्य ही जलदान किया जाना चाहिए।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

वाशिंग पाउडर

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
F-264, F-264A, RIICO Ind. Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India
CIN : U15412RJ2005PTC020174

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

याद रहेंगे सुषमा और जेटली

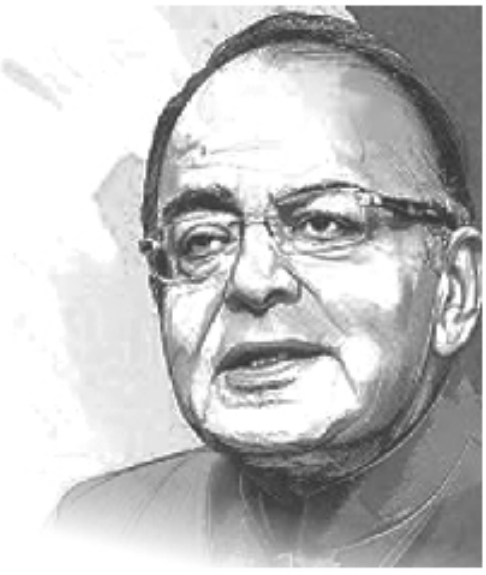

✍ अंजना गुर्जरगौड़

मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में विदेश मंत्री रही सुषमा स्वराज एवं वित्तमंत्री अरुण जेटली के निधन से देश ने दो होनहार और प्रेरणादायी नेताओं को खो दिया है। किसी को उम्मीद नहीं थी कि वे इस तरह अचानक चले जाऐंगे।

निधन के कोई चार-पांच घंटे पहले ही सुषमाजी ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन विधेयक 2019 के लोकसभा में पारित होने के बाद प्रधानमंत्री मोदी को ट्वीट करके बधाई दी थी। कहा कि 'मैं अपने जीवन में इस दिन को देखने की प्रतीक्षा कर रही थी।' सुषमा स्वराज देश की लोकप्रिय नेता थीं और विदेशों में भी उनकी पहचान असाधारण राजनेता के रूप में थी। 14 फरवरी, 1952 को हरियाणा के अंबाला कैंट में जन्मी सुषमा ने सबसे पहला चुनाव 1977 में लड़ा। तब वे 25 साल की थीं। सुषमाजी को पति स्वराज कौशल व इकलौती बेटी बांसुरी ने सैल्यूट देकर अंतिम विदाई दी। पिछले कुछ महीनों से वे बीमार थीं। सन् 2016 में उनकी किडनी की सर्जरी हुई थी। जिस वजह से उन्होंने लोकसभा चुनाव लड़ने से भी मना कर दिया था। वे आखिरी बार पिछले महीने विश्व हिन्दू परिषद के कार्यक्रम के दौरान नजर आई थीं। उन्होंने 67 साल की उम्र में दिल्ली स्थित एम्स में आखिरी सांस ली।

सुषमा स्वराज के नाम कई कीर्तिमान हैं, जिसे अब देश याद करेगा और भावी पीढ़ी उनसे प्रेरित होगी। 1977 में जब वह 25 साल की थीं, तब वह भारत की सबसे कम उम्र की कैबिनेट मंत्री बनी। उन्हें 1977 से 1979 तक सामाजिक कल्याण, श्रम और रोजगार जैसे 8 मंत्रालय मिले थे। जिसके बाद 27 साल की उम्र में 1979 में वह हरियाणा में जनता पार्टी की राज्य अध्यक्ष बनी थीं। सुषमा स्वराज के नाम ही राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक पार्टी की पहली महिला प्रवक्ता होने का गौरव प्राप्त था। इसके अलावा वे पहली महिला मुख्यमंत्री, केन्द्रीय कैबिनेट मंत्री और विपक्ष की पहली महिला नेता थीं।

इंदिरा गांधी के बाद सुषमा स्वराज दूसरी ऐसी महिला थीं, जिन्होंने विदेश मंत्री का पद संभाला। बीते चार दशकों में वे 11 चुनाव लड़ीं, जिसमें तीन बार विधानसभा का चुनाव लड़ीं और जीतीं। सुषमा सात बार सांसद रह चुकी थीं। पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से कानून की डिग्री ली। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। आपातकाल का पुरजोर विरोध करने के बाद वे सक्रिय राजनीति से जुड़ गईं। सुषमा स्वराज भारतीय संसद की प्रथम और एकमात्र ऐसी महिला सदस्य थीं, जिन्हें आउटस्टैंडिंग पार्लियामेंटेरियन सम्मान मिला। उन्होंने देश और दुनिया में कई महत्वपूर्ण काम किए। विदेश मंत्री रहते हुए उन्होंने विदेशों में फंसे हर भारतीय नागरिक की मदद की। अमेरिकी अखबार यूएस डेली वॉल स्ट्रीट जनरल में उन्हें भारत की सबसे ज्यादा प्यार पाने वाली राजनेता कहा गया।

भाजपा के शीर्षस्थ नेता पूर्व वित्तमंत्री एवं सुप्रीम कोर्ट के जाने-माने अधिवक्ता अरुण जेटली का 24 अगस्त को दोपहर देहावसान हो गया। उनके निधन पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया है। सांस लेने में तकलीफ के बाद उन्हें 9 अगस्त को एम्स (नई दिल्ली) में भर्ती किया गया था। 25 अगस्त को निगम बोध घाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। शव यात्रा में हजारों भाजपा कार्यकर्ताओं सहित भाजपा व अन्य दलों के नेताओं ने भाग लिया। जेटली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रथम मंत्रिमंडल में 26 मई, 2014 से 9 नवम्बर 2014 तक रक्षामंत्री व बाद में 30 मई, 2019 तक वित्तमंत्री रहे। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में न्याय व कानून मंत्री तथा सूचना व प्रसारण मंत्री भी रहे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी संगीता जेटली, पुत्र रोहन व पुत्री सोनाली को छोड़ गए हैं।

थकान से बचें, खाएं मौसमी फल-सब्जियां

हमारे काम करने की ऊर्जा और पोषण में आपसी सम्बंध है, जिसका असर शरीर के रक्त और उसके शुगर लेवल पर पड़ता है। रक्त में शुगर का स्तर नियंत्रित रहना चाहिए ताकि आप दिनभर अपने आपको ऊर्जा से लबरेज रख सकें। भोजन में ली जाने वाली चीजों में कई ऐसी भी हैं, जो रक्त में शुगर के स्तर को संतुलित रखती हैं।

– डॉ. अनिता शर्मा

भोजन में ली जाने वाली ऐसी चीजें भी हैं, जो रक्त में शुगर के स्तर को बढ़ा देती हैं। रक्त में जब शुगर का स्तर बढ़ जाता है तो काफी ज्यादा थकान महसूस होती है। कई बार तो यह इतनी ज्यादा बढ़ जाती है कि उठना-बैठना भी मुश्किल हो जाता है। चीनी और ग्लूकोज से युक्त खाद्य पदार्थ जैसे-केक, चॉकलेट, मिठाइयां, मीठा पेय पदार्थ, बॉकरेल, मैदे से बनी चीजें आदि यह सभी हमारे रक्त में शुगर के लेवल को बढ़ा देती हैं। इसकी बजाए वे चीजें खानी चाहिए जो रक्त में शुगर के लेवल को भी कंट्रोल में रख सकें।

फ्रूट्स : मौसमी फल ऊर्जा और रक्त देते हैं। दिन में तीन मौसमी फल अगर अलग अलग समय पर खाए जाएं तो यह शरीर के लिए काफी फायदेमंद होगा। तले-भुने या हाई कैलोरीज वाले स्नैक्स की बजाय मौसमी ताजे फल व्यक्ति को एक्टिव बनाये रखते हैं, डिहाइड्रेशन से बचाते हैं और एनर्जी लेवल में वृद्धि करते हैं।

मौसमी सब्जियां : आहार में ज्यादा से ज्यादा मौसमी और ताजी सब्जियों को शामिल करें। सर्दी हो या गर्मी, मौसमी सब्जियों को सलाद के रूप में खाएं या पकाकर सब्जी बनाएं अथवा इन्हें अन्य चीजों के साथ खाएं। ताजी और मौसमी सब्जियां रक्त में शुगर के लेवल को मैनेज करती हैं। विटामिन और खनिज लवणों से भरपूर सब्जियां सेहत के लिए भी फायदेमंद हैं। सब्जियों को कच्चा काटकर उनमें अंकुरित, चाट मसाला और धनिया-पुदीने की चटनी या दही के साथ मिलाकर अथवा चावल के साथ खाएं। यह ऐसा पौष्टिक आहार है, जो शरीर की दैनिक जरूरत को पूरा करने में सक्षम है। इसके अलावा मौसमी सब्जियों में पानी की मात्रा और पौष्टिकता भी अधिक होती है।

सब्जियों का जूस : फलों के जूस में शुगर की काफी मात्रा रहती है। फलों के जूस की बजाए अपने शरीर की कार्यप्रणाली को दुरुस्त रखने के लिए सब्जियों का जूस पीएं। तीन अलग-अलग प्रकार की कच्ची सब्जियों को मिक्सर में डालकर पीसे और इसमें पानी मिलाकर जूस के रूप में प्रतिदिन उपयोग करें।

भोजन में प्रोटीन को शामिल करें : अगर थकान है तो अंडे के सफेद भाग में मौजूद प्रोटीन काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। भोजन में प्रोटीन युक्त भोज्य पदार्थों को ज्यादा से ज्यादा शामिल करें।

थोड़े-थोड़े अंतराल में खाएं : रक्त में शुगर लेवल को मैनेज करने के लिए हर दो घंटे के बाद कुछ न कुछ हल्का-फुल्का खाते रहें, इससे आपको पूरे दिन के लिए ऊर्जा हासिल होती है। इसलिए दिन में तीन दफे खाने की बजाय थोड़े-थोड़े अंतराल पर कम मात्रा में खाएँ। हालांकि इस तरह का रूटीन अपनाना थोड़ा मुश्किल होता है, लेकिन कोशिश की जाएं तो ऐसा करके पूरे दिन खुद को ऊर्जावान बनाये रखा जा सकता है।

गर्मी में अमृत है छाछ

छाछ औषधि के रूप में काम करती है। दिन में यदि दो बार छाछ पी लें तो उससे सेहत ठीक रहती है और वजन घटाने में भी मदद मिलती है।

जिनका पाचन तंत्र मजबूत नहीं है, उन्हें दूध की जगह छाछ का इस्तेमाल करना चाहिए। छाछ प्रोबायोटिक आहार है। इसमें सूक्ष्मजीव होते हैं, जो हमारी आंतों को सक्रिय रखते हैं। इनकी सहायता से पाचन में सुधार होता है। इसके अलावा ये प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने और पोषक तत्वों के निर्माण व हृदय रोगों से रक्षा में मदद करते हैं। छाछ की खास बात यह है कि इसमें नशा नहीं होती, क्योंकि इसमें से मक्खन पहले ही निकाल लिया जाता है।

छाछ, पोटैशियम, कैल्शियम और रिबोफ्लेविन के अलावा फॉस्फोरस का भी अच्छा स्रोत है, जो भोजन को झटपट पचाने में मदद करता है। अगर अधिक जी मिचलाता हो तथा अजीर्ण, ज्वर, दुर्बलता व पेट में हल्का दर्द हो तो तुरंत छाछ पीएं। यदि दिन में एक से दो बार भुना जीरा, थोड़ा नमक और पिसी हुई काली मिर्च डालकर छाछ पिएं तो एक सप्ताह में पेट के कीड़ों से छुटकारा मिल जाएगा।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

समस्त त्वरित बैंकिंग सुविधाओं के साथ

◆ मिस्ड कॉल अलर्ट सेवा–बैलेन्स जानें मोबाईल नं.: 8866466644
◆ आईएमपीएस (तुरन्त भुगतान सुविधा)
◆ मियादी जमाओं पर अधिकतम ब्याज दरें ◆ ऋणों पर न्यूनतम ब्याज दर
◆ खातें में तुरन्त मोबाईल नम्बर, आधार व पेन नं. जुड़ावें
◆ तुरन्त (डेबिट कार्ड) सुविधा ◆ मोबाईल बैंकिंग ◆ सरलतम प्रक्रिया

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें, इन सुविधाओं की जानकारी के लिए अपनी निकटतम शाखा में सम्पर्क करें।

श्रीमती विमला सेठिया, चेयरपर्सन | श्रीमती वन्दना वजीरानी, प्रबन्ध निदेशक | शिवनारायण मानधना, उपाध्यक्ष

निदेशक : हस्तीमल चोरडिया, महेशचन्द्र सनाढ्य, शांतिलाल पुंगलिया, राधेश्याम आमेरिया, विनोद कुमार आंचलिया, आदित्येन्द्र सेठिया, सुनीता सिसोदिया, चांदमल नंदावत, बालकिशन धूत, अभिषेक मीणा, रणजीत सिंह नाहर, सीए बालकृष्ण डाड एवं समस्त अरबन बैंक परिवार

प्रधान कार्यालय : केशव माधव सभागार, एलसीएस सिटी, चित्तौड़गढ़ ◆ शाखाएं : चित्तौड़गढ़, चन्देरिया, बेगूं, निम्बाहेड़ा, कपासन, बड़ीसादड़ी

नि:संतानता अभिशाप नहीं

उचित सलाह व इलाज समय रहते मिल जाए तो संभव है समाधान

इंदिरा आईवीएफ का इस दिशा में देशव्यापी अभियान

✍ नितिज मुर्डिया

चालीस साल पहले दुनिया को प्रथम टेस्ट–ट्यूब बेबी से परिचित कराया गया था, जब आईवीएफ तकनीक के जरिए लुइस ब्राउन का जन्म 25 जुलाई, 1978 को ब्रिटेन के ओल्डहॉम में हुआ। इस दिन को विश्व आईवीएफ दिवस घोषित किया गया।

करीब तीन दशक से आईवीएफ तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है। लेकिन पिछले कुछ साल से इसकी मांग तेजी से बढ़ी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने वर्ष 2018 में कहा था कि दुनिया भर में लगभग 180 मिलियन जोड़े बांझपन से जूझ रहे हैं और अब इनविट्रो फर्टिलाइजेशन(आईवीएफ) ऐसे जोड़ों की मदद कर रही है। देश भर में आईवीएफ तकनीक के 1600 क्लिनिक हैं। जिनमें तेजी से उभरता, देश में सर्वाधिक सेंटर वाला **इंदिरा आईवीएफ हॉस्पिटल है, जिसके 70 फर्टिलिटी क्लिनिक हैं। इस समय यह हॉस्पिटल देश में सबसे ज्यादा 48 हजार 500 आईवीएफ साइकिल करने के कारण भी चर्चा में है।**

नि:संतानता की समस्या बरसों पुरानी है। पहले लोग इस विषय पर बात करने से भी कतराते थे, लेकिन इंदिरा आईवीएफ के 'नि:संतानता से मुक्ति पाओ अभियान' की बदौलत अब दम्पती खुलकर बात करने लगे हैं। दूर–दराज से इलाज के लिए आने लगे हैं। नए एडवान्समेंट के चलते आईवीएफ से गर्भधारण में सफलता दर कई मामलों में 60 से 70 फीसदी और उससे भी ज्यादा तक है। आईवीएफ एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अण्ड व शुक्राणुओं को शरीर से बाहर फर्टिलाइज कराया जाता है, बाद में एम्ब्रियोलॉजी लैब में भ्रूण विकसित किया जाकर उसे 2–5 दिन बाद महिला के गर्भाशय में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है।

हर घंटे में दो इंदिरा आईवीएफ बेबी

आठ वर्ष से ज्यादा समय हो गया है, इंदिरा आईवीएफ ग्रुप एक ही लक्ष्य के साथ काम कर रहा है और वह है नि:संतान दम्पतियों के जीवन में खुशियों की बरसात करना। ये विशेषता ही फर्टिलिटी ट्रीटमेंट के लिए इंदिरा आईवीएफ को देश की सबसे बड़ी एवं विश्वसनीय चेन बनाती है। इंदिरा आईवीएफ के सेन्टरों में प्रति घंटे दो बेबी जन्म लेकर नि:संतान दम्पतियों के जीवन में खुशियां भर रही हैं।

सफलता का राज

1. ट्रेनिंग सेंटर ऑफ एक्सीलेंस : इन फर्टिलिटी डॉक्टर एवं एम्ब्रियोलॉजी की ट्रेनिंग पर भारी निवेश करते हैं ताकि उनकी योग्यता पेशेंट को उच्चतम सफलता दर दिला सके। भारत में आईवीएफ स्पेशलिस्ट की कमी है जिसके कारण हमने स्टेट ऑफ आर्ट ट्रेनिंग सुविधा वाली इंदिरा फर्टिलिटी एकेडमी शुरू की है।

2. तकनीकी कौशल : आधुनिक एम्ब्रियोलॉजी लैब उपकरणों, कस्टमाइज्ड पेशेंट स्पेसिफिक आईवीएफ ट्रीटमेंट प्रोटोकॉल से हमने अपनी पूरी प्रक्रिया को सुरक्षित, प्रभावी व पेशेंट फ्रेण्डली बनाया है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस व कस्टमर केयर सेल द्वारा हम पेशेंट की आवश्यकतानुरूप इलाज में परिवर्तन के प्रति क्रियाशील रहते हैं।

3. अपेक्षित प्रयास : हमारा फोकस सबसे पहले बच्चा नहीं होने की पेशेंट की तकलीफ को समझते हुए उसके शरीर की जरूरत के अनुसार उपचार मुहैया कराने पर रहता है। हमारी कोशिश होती है कि है कि आईवीएफ उपचार के लिए दम्पती की हॉस्पिटल में विजिट कम हो और गर्भधारण की पूरी प्रक्रिया को परेशानी रहित इस तरह बनाया जाता है।

(लेखक इंदिरा आईवीएफ हॉस्पिटल की एम्ब्रियोलॉजी लैब के निदेशक हैं)

संवत्सरी अथवा पर्यूषण जैन धर्म का सर्वप्रमुख और सर्वश्रेष्ठ पर्व है। आठ दिन तक मनाए जाने वाले इस पर्व को 'आत्मा का उत्सव' भी कहा जा सकता है। इस पर्व का मकसद ही यह है कि आत्मा पर छाए कर्मों के आवरणों को हटाकर हम अनंत ज्योति से रूबरू हों।

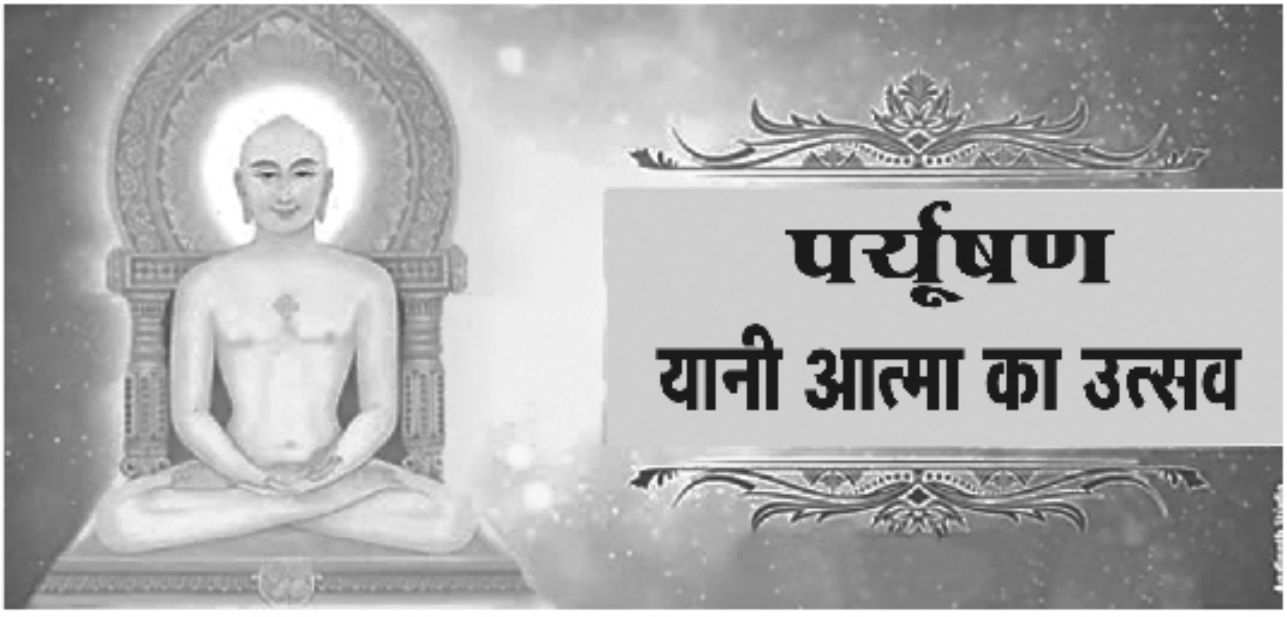

पर्यूषण यानी आत्मा का उत्सव

✍ श्री जयमुनि

श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी भाद्र मास की शुक्ल पंचमी को संवत्सरी पर्व के रूप में मनाते हैं। इसी पर्यूषण पर्व भी कहा जाता है। सात दिन त्याग, तपस्या, शास्त्र श्रवण व धर्म-आराधना के साथ मनाने के बाद आठवें दिन को महापर्व के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन साधु साध्वी व श्रावक श्राविकाएं अधिक से अधिक धर्म-ध्यान और त्याग व तपस्या करते हैं। एक-दूसरे से क्षमा मांगते हैं और दूसरों को क्षमा करते हुए मैत्रीभाव की ओर कदम बढ़ाते हैं।

जैन धर्म के अनुसार घड़ी की सुई के समान कालचक्र की सूई भी एक बार नीचे की ओर और फिर ऊपर की ओर चलती है। इस आधार पर यहां काल को (अवसर्पिणी काल व उत्सर्पिणी काल) दो वर्गों में बांटा गया है। अवसर्पिणी काल में जहां ऊपर से नीचे उतरते हुए धर्म की हानि हो रही होती है, वहीं उत्सर्पिणी काल में हम घोरतम दुख की ओर से धर्म व सुख की ओर चढ़ते हैं। काल का पहला आरा 'दुखम दुखम' के समाप्त होने के बाद दूसरे चरण के प्रारंभ में प्रकृति का रुख मुड़ने लगता है। भीषण गर्मी से तप्त धरती पर मेघों की बरसात होती है। 49वें दिन तक यह बरसात धरती को हरा-भरा कर देती है। मानव जाति पहली बार प्रकृति के इस सौम्य रूप से परिचित होती है।

अहिंसा, प्रेम, सद्भावना भाईचारे का वह मंगलकारी दिन ही संवत्सरी के रूप में मनाया जाता है। जैन समाज चतुर्मास प्रारंभ होने के 50वें दिन इस पर्व को मनाता है। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि पहले सात सप्ताहों में आंतरिक शुद्धि करते हुए 50वें दिन पूर्ण शुद्धि तक पहुंचने का प्रयास है संवत्सरी। जो लोग शुरुआत से धर्म ध्यान नहीं करते, वे पर्यूषण के आठ दिनों में अपनी अंतरात्मा की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। अगर किसी कारणवश इन आठ दिनों में भी आत्म जागरण न कर सकें तो संवत्सरी के आठ प्रहरों में सात प्रहर धर्म आराधना करते हुए आठवें प्रहर में आत्मबोध के महासागर में डुबकी लगाई जा सकती है।

इस पर्व का एकमात्र उद्देश्य आत्मा का विकास है, जिसमें सब क्षमतानुसार अपनी आत्मा की शुद्धि करते हैं। संवत्सरी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संदेश है क्षमापना। क्षमापना का अर्थ है अपने प्रति किसी ने गलती की हो तो उसे माफ कर दें और अपनी ओर से किसी के प्रति दुर्व्यवहार हुआ हो तो उससे क्षमा मांग लें। क्षमा देने के लिए जहां क्रोध का त्याग करना होता है, वहीं क्षमा मांगने के लिए अहंकार का।

कुल मिलाकर यह त्योहार अपने दैनिक जीवन को ऐसा बनाने की प्रेरणा देता है, जिससे व्यक्ति और समाज को सुख व शांति की प्राप्ति हो।

Happy Navratri

Royal Fabricators

...a house of metal craft

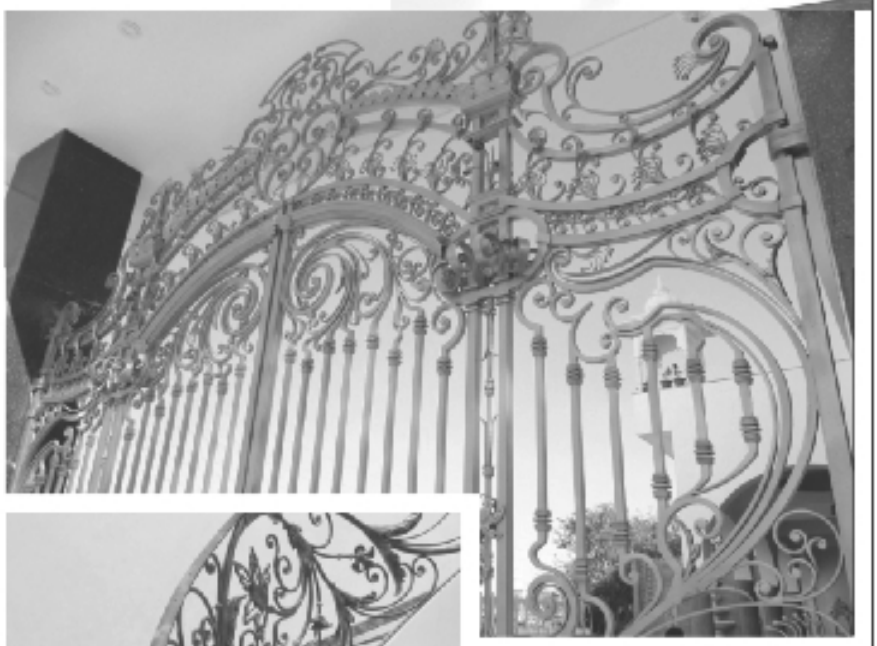

Deal In :

- Residential and Commercial Metal Work
- CNC machine Job Work.
- Authorised Dealer of TATA PRAVESH Door.
- Aluminum and Stainless steel railings.

Ramakant Ajaria: 9414162895
Tushar Ajaria: 9828148574
Raghvendra Ajaria: 9602226582
Rajveer Ajaria: 9799119320

TATA Pravesh Steel Doors with Wood Finish

36, kala ji Gora ji,Lake Palace Road,Udaipur :Office
7, Eklingpura chouraha Udaipur : Factory
TATA PRAVESH Door Sec.4 Opp Swagat Vatika : Gallery

www.royalimaginations.com| tusharajaria@gmail.com

भवन में खास होता है ब्रह्म स्थान

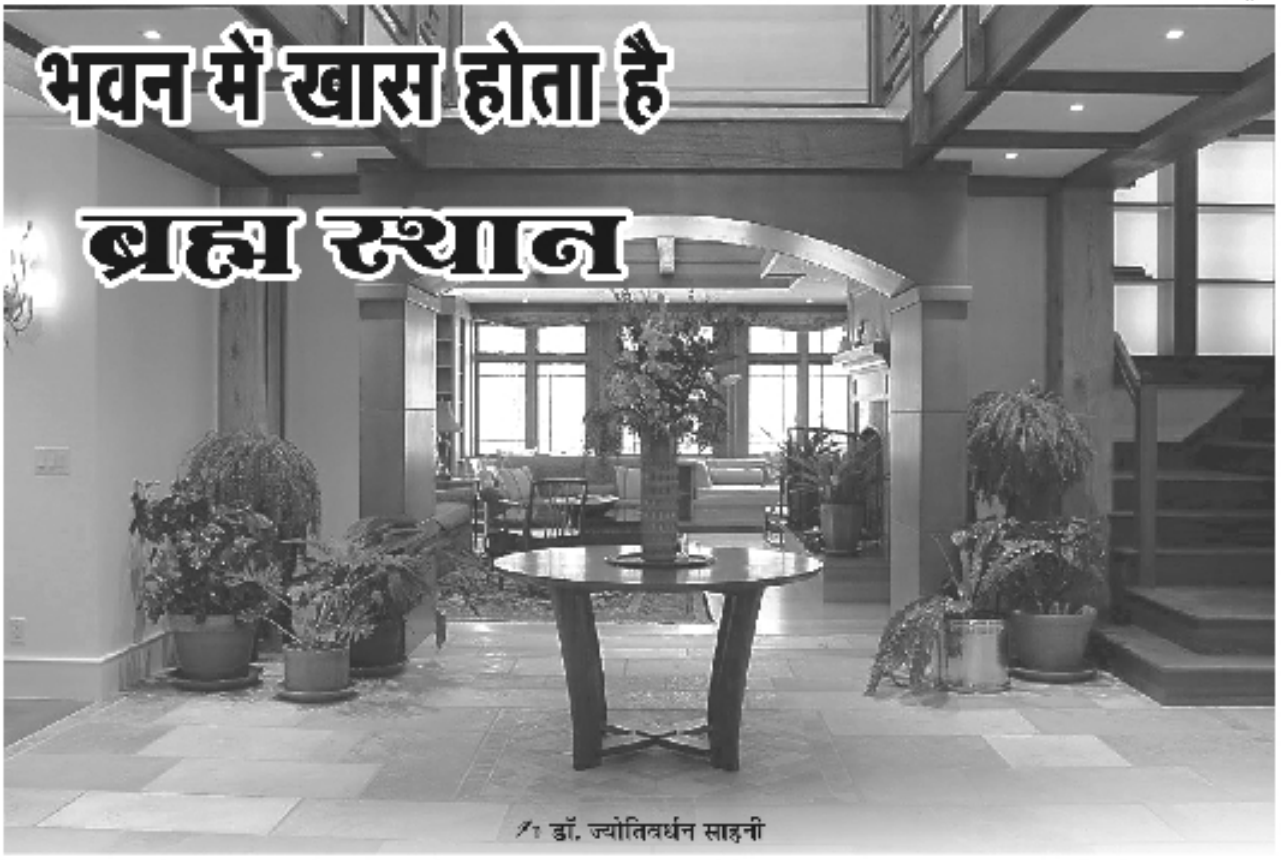

✍ डॉ. ज्योतिवर्धन साहनी

किसी भी भवन में, चाहे वो घर हो या ऑफिस अथवा फैक्ट्री, ब्रह्म स्थान अति महत्वपूर्ण है। आम भाषा में भवन के केन्द्र बिन्दु को ब्रह्म स्थान कहते हैं। वास्तु में ब्रह्म स्थान का क्या है महत्व और क्या होता है इसका असर, आइए जानें।

- मानव शरीर में पेट का मध्य यानी नाभि का जो महत्व है, वही महत्व किसी भवन में ब्रह्म स्थान का है। जिस प्रकार पेट सही रहने पर सारा शरीर स्वस्थ रहता है, इसी प्रकार ब्रह्म स्थान का वास्तु सही होने पर भवन में सब स्वस्थ रहते हैं और अच्छी तरक्की कर जीवन खुशहाल बनाते हैं।
- व्यावसायिक भवन हो या आवासीय भवन, दोनों में ब्रह्म स्थान का दोष प्रभावी होता है। जैसे पेट भारी होने से व्यक्ति भाग-दौड़ नहीं सकता है, ऐसे ही भवन में ब्रह्म स्थान में दोष होने से व्यक्ति की उन्नति/तरक्की रुक जाती है। इस स्थान पर सीढ़ी कभी न बनाएं, क्योंकि सबसे ज्यादा भार इसी में होता है। भारी फर्नीचर, बीम आदि ब्रह्म स्थान में बिल्कुल नहीं होने चाहिए। बेहतर है कि इस जगह को खाली व खुला स्थान रखें। यहां से भवन के सदस्यों का बार-बार गुजरना होता है और ऐसा होने से उनमें बेहतर तालमेल व मधुर संबंध रहते हैं। यदि कमरा ब्रह्म स्थान में ही बनाना है तो ड्राइंग रूम, लिविंग रूम, डाइनिंग रूम बना सकते हैं।
- व्यावहारिक रूप से यहां गड्ढा भी नहीं होना चाहिए अर्थात् हमारी लिफ्ट भी कभी ब्रह्म स्थान में नहीं हो, क्योंकि लिफ्ट की जगह पर पांच फुट का गहरा गड्ढा कम से कम तो अवश्य होगा ही। ब्रह्म स्थान पर टॉयलेट सीट होने को भी सर्वथा मनाही है, क्योंकि वो भी गड्ढे के रूप में होती है। कई जगहों पर ऐसा पाया गया है कि ब्रह्म स्थान में अंडरग्राउण्ड पानी संग्रह करने वाले अथवा स्विमिंग पूल बनाने वाले अथवा स्विमिंग पूल बनाने वाले लोगों को मृत्युयोग व कुलनाश की परिस्थितियों व रातोंरात आर्थिक रूप से उजड़ जाने का सामना करना पड़ा है। और ऐसा भी देखने में आता है कि ब्रह्म स्थान में गड्ढा होने की स्थिति में घर में संतानोत्पत्ति नहीं हो पाती है। याद रखें, ब्रह्म स्थान का फर्श ऊंचा-नीचा न होकर समतल होना चाहिए।
- यदि किसी प्लाट में ब्रह्म स्थान में गड्ढा बना दिया जाता है तो ऐसे प्लाट के मध्य भाग में बने गड्ढे को तुरंत मिट्टी से भरवा दें। अगर प्लाट में गंगाजल, पंचामृत अथवा गौमूत्र का 7 दिनों तक छिड़काव करें और तीन-चार बार किसी नए बछड़े को जन्म देने वाली गाय को घुमा दें तो मकान/भवन बनना शुरू हो जाएगा और बाधाएं भी नहीं आएंगी।
- यदि ब्रह्म स्थान छत तक खुला हो और वहां से आकाश दिखता हो तो ऐसे पूरे भवन को आकाश तत्व व वायु तत्व का भी विशेष लाभ मिलता है और भवन की सकारात्मक ऊर्जा कई गुना बढ़ जाती है।

'इंजेक्शन लगा है, दर्द तो होगा'

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35ए के प्रावधानों को हटाने को लेकर केन्द्र सरकार के फैसले पर 'कहीं खुशी-कहीं गम' जैसा माहौल है। इस सम्बन्ध में फैसले के घरेलू और बाहरी परिणामों को लेकर जो खास प्रतिक्रिया सामने आई हैं। प्रस्तुत हैं, उनके सम्पादित अंश।

✍ प्रत्यूष टीम

यह शल्य चिकित्सा वर्षों से लंबित थी भारत माता के माथे में माइग्रेन था, छोटी-छोटी मीठी गोलियों से इसे ठीक किया जा रहा था.... मगर देश के दो कुशल सर्जनों ने कोशिश करके इस माइग्रेन को बाहर निकाल दिया है। अम्मा हमारी खुश है, स्वस्थ है, सब कुछ बहुत अच्छा होगा। अधीर रंजन चौधरी ऐसा कैसे कह सकते हैं कि यह मसला यूनाइटेड नेशंस में चला गया है। यही भाषा तो पाकिस्तान बोल रहा है। जिसके पास शक्ति होती है उसी के साथ विश्व चलता है, तो ऐसे में यूनाइटेड नेशंस कहां से बीच में आ गया? उस समय एक गलती हो गई थी अब यूनाइटेड नेशन दफ्तर को फेयरवेल का गिफ्ट दीजिए।

कुमार विश्वास
कवि एवं राजनीतिक विश्लेषक

कई बुद्धिजीवी विलाप कर रहे हैं कि वहां पर इंटरनेट कट गया है। कुछ घंटों के लिए संपर्क कटा है। विस्थापितों की तरह उनका जीवन नहीं कटा है। विस्थापितों का तो सब कुछ कट गया है उनका तो सिर्फ संपर्क कटा है। वे लाखों लोग जिन्हें रात में कहा गया अपनी बहन, बेटी, प्रॉपर्टी छोड़कर सब निकल जाओ, उनका क्या? अब इंजेक्शन लगा है तो थोड़ा सा दर्द तो होगा ही। कश्मीर के लोगों को 10-15 राजनीतिक लफंगों ने बंधक बनाया हुआ है, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के कुछ लोग उन्हें सपोर्ट करते हैं।

महबूबा मुफ्ती की बेटी सना विदेश की यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट हैं। मैं महबूबा जी से अनुरोध करता हूं कि सना जी को 500 रु प्रति व्यक्ति वाली उसी स्कीम में शामिल करवाएं जिनमें लड़कियां पत्थर फेंकती हैं, इनके खुद के बच्चे दुबई लंदन अमेरिका में पढ़ेंगे और कश्मीरी बच्चों को नौकरी नहीं मिलेगी और उसे 100 रु देकर पत्थर फिकवाएंगे। 70 साल से जो नरक हम भोग रहे थे उसका उपचार मोदी और अमित शाह ने कर दिया या कांग्रेस ने कर दिया जो भी है, तारीफ की बात है। विधानसभा भंग हो गई है। इस पर बहस होनी चाहिए मगर 370 पर बहस नहीं होनी चाहिए। कुछ लोग कह रहे हैं कि यह फलस्तीन की तरह होगा। मैं पूछना चाहता हूं कि भारत भी अपने संकल्पों को इजरायल की तरह खोल दे क्या? इमरान खान और उनके पाकिस्तान को बेचैनी इसलिए है कि उनकी दुकान बंद हो रही है।

पीओके भी हमारा

मेरा स्पष्ट मत है कि जम्मू-कश्मीर के जिस हिस्से पर पाकिस्तान ने कब्जा कर रखा है, वह पाक अधिकृत कश्मीर(पीओके) नहीं हैं बल्कि वह पाक अधिकृत जम्मू-कश्मीर है। यानी वह पीओके नहीं, बल्कि पीओजेके कहलाना चाहिए।

जिसे आज हम पीओके कहते हैं, वह हमारा ही हिस्सा है जिस पर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा कर रखा है। अब तो वाकई इस बात की जरूरत है कि हमें अपने उस हिस्से को वापस भारत में शामिल करने पर बात करनी चाहिए। अब तक इस मामले में अधिक बात हो नहीं हुई। यद्यपि 1992 में भारतीय संसद ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया था कि कश्मीर को लेकर अगर पाकिस्तान से विवाद है तो वह पाक अधिकृत कश्मीर को लेकर है। इसे हमें यानी भारत को वापस लेना है। गृहमंत्री ने संभवतः लोकसभा में अपने वक्तव्य के जरिए इसी बात को आगे बढ़ाया है। जब पीओजेके के हमारे ही बाशिंदों के लिए भी रूजट होगा, उनके विकास के लिए खर्च होगा, राजौरी जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों आदि का विकास होगा, लोगों का भारत से जुड़ाव भी होगा।

मौलाना अख्तर हुसैन देहलवी
चेयरमैन, अंजुमन मिनहाज-ए-रसूल

फैसले की आलोचना ठीक नहीं

केन्द्र के फैसले की पूरी तरह आलोचना करना ठीक नहीं होगा। इसमें सकारात्मक बिन्दु भी हैं। संसद में तेजी से लिए गए निर्णयों से हम सभी हैरान रह गए। ऐसा लगता है कि इस कदम को पूरे देश में भरपूर समर्थन मिला है। मैंने इन हालात को लेकर बहुत सोच-विचार किया है। लद्दाख को केन्द्रशासित प्रदेश बनाने का निर्णय स्वागत योग्य है। सदर-ए-रियासत रहते हुए मैंने 1965 में इसका सुझाव दिया था।

– डॉ. कर्ण सिंह, कांग्रेस

नेहरू की वजह से भारत का हिस्सा

जम्मू कश्मीर अगर आज भारत का अभिन्न अंग है तो वह जवाहरलाल नेहरू की वजह से है।

संसद में आज जो हो रहा है, यह त्रासदी है 1952 से लेकर जब-जब नए राज्य बनाए गए हैं या किसी राज्य की सीमाओं को बदला गया है तो बिना विधानसभा के विचार-विमर्श के नहीं बदला गया है। जम्मू-कश्मीर के संविधान का क्या होगा ? क्या सरकार उस संविधान को खारिज करने के लिए भी विधेयक लेकर आएगी। – मनीष तिवारी, सांसद, कांग्रेस

हालात नाजी कैंप जैसे

गृहमंत्री जी आपने घोषणा की थी कि कश्मीरियों को हम गोली से नहीं गले लगाकर आगे ले जाएंगे। आज कश्मीर के हालात नाजी कैंप जैसे हो गए हैं।

– अधीर रंजन चौधरी, नेता कांग्रेस, लोकसभा

एक तरफा निर्णय

देश के सभी धर्मनिरपेक्ष दल जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ खड़े रहने और एकतरफा निर्णय के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट रहेंगे।

– गुलाम नबी आजाद, कांग्रेस

भरोसे के साथ धोखा

भारत सरकार का एकतरफा एवं चौंकाने वाला निर्णय उस भरोसे के साथ पूरी तरह धोखा है जो जम्मू-कश्मीर के लोगों ने भारत में जताया था जब राज्य का 1947 में इसके साथ विलय हुआ था। यह फैसला दूरगामी एवं भयंकर परिणाम देने वाला होगा। यह राज्य के लोगों के प्रति दिखाई गई आक्रामकता है। – उमर अब्दुल्ला, पूर्व मुख्यमंत्री

लोकतंत्र का स्याह दिन

आज का दिन भारतीय लोकतंत्र का एक स्याह दिन है। 1947 में दो राष्ट्रों के सिद्धांत को खारिज करने तथा भारत के साथ जाने का जम्मू-कश्मीर नेतृत्व का फैसला भारी पड़ गया। अनुच्छेद 370 रद्द करने का भारत सरकार का एकतरफा फैसला अवैध एवं असंवैधानिक है जो जम्मू-कश्मीर को चलाने का पूरा अधिकार भारत को दे देगा।

– महबूबा मुफ्ती, पूर्व मुख्यमंत्री

बंधन टूटे

कश्मीरी बेटियां खुश

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 और 35ए के निष्प्रभावी होने के बाद वहां की महिलाएं सबसे ज्यादा खुश हैं। उनके अधिकारों को लेकर 370 से पहले की बदतर स्थिति बदलेगी और उन्हें वे तमाम हक-हकूक मिलेंगे, जो भारत के अन्य राज्यों में महिलाओं को हासिल हैं।

अभी तक जम्मू कश्मीर में महिलाएं सिर्फ शरीयत कानून के दायरे में आती थीं शादी से लेकर तलाक तक सभी मामले भारत की कानून व्यवस्था के तहत, सुलझाने की बजाए शरीयत के प्रावधानों से सुलझाए जाते थे। 370 के हटने के बाद वहां की हर जाति, जाति, सम्प्रदाय की महिलाओं को आम भारतीय महिलाओं की तरह ही कानूनी अधिकार मिलेंगे।

बेटी को दे सकूंगी संपति

'आम कश्मीर की पीड़ा को नहीं जानते हैं। मैं कश्मीरी महिला हूं, लेकिन अपनी पुश्तैनी संपत्ति में अपने बच्चों को नहीं दे सकती। कश्मीर को मिले विशेष राज्य के दर्जे के चलते पंजाबी से शादी करते ही मेरे कश्मीरी अधिकार खत्म हो गए। आज हुए फैसले का मैं लम्बे समय से इंतजार कर रही थी।' यह कहना है दिल्ली की चाणक्यपुरी में रहने वाली रेणु शर्मा का

उन्होंने 1986 में दिल्ली में एक पंजाबी युवक जेके शर्मा के साथ शादी कर ली थी। वे बताती हैं कि श्रीनगर और उधमपुर में उनकी बड़ी पुश्तैनी संपत्ति है। बाहरी राज्य के व्यक्ति के साथ शादी करने के बाद वे इस संपत्ति को अपनी एकमात्र बेटी को नहीं दे सकती। इसे लेकर बड़ी चिंता थी श्रीनगर की संपत्ति उन्होंने कम दामों में बेच दी। अब निचौलिये उधमपुर के लिए भी संपर्क कर रहे थे। घाटी में उन्होंने अपने परिवार के लोगों से बात की है। उनकी बहन अभी वहीं है। वहां हालात सामान्य हैं। हम महिलाएं इस फैसले से बहुत खुश हैं। अनुच्छेद 370 हटने के बाद मेरी चिंता दूर हो गई है। कश्मीर की

.... बेटियां खुश

बेटियां अब बाहरी राज्यों में शादी करने के बाद अपने पुश्तैनी हक से दूर नहीं होंगी। इन कश्मीरी बेटों बनी रहेंगी और हमारे हक सलामत रहेंगे।

एकता कौल भी खुश

पापा ने सुबह-सुबह बताया और कह जल्दी से टीवी देख। यह देखकर खुश हो गई कि मेरे कश्मीर से अनुच्छेद 370 विदा हो गया है। मैं कश्मीरी फिल्मों की एक्ट्रेस हूं लेकिन गैर कश्मीरी सुमित व्यास से विवाह के बाद मुझे भी गैर-कश्मीरी घोषित कर दिया गया। अब खुश हूं, अपने राज्य का फिर से हिस्सा बनूंगी।

नागरिकता बरकरार

अब तक जो व्यवस्था थी उसके तहत जम्मू-कश्मीर की कोई महिला अगर कश्मीर के अलावा देश के किसी दूसरे राज्य में शादी करती थी तो उसकी जम्मू-कश्मीर की नागरिकता ही खत्म हो जाती थी लेकिन अनुच्छेद 370 लागू हटने पर यह नियम पूरी तरह खारिज हो जाएगा। महिलाएं न सिर्फ पुरुषों की बराबरी में कानूनों का लाभ उठा सकेंगी बल्कि हमेशा और हर स्थिति में राज्य की नागरिक भी बनी रहेंगी।

पाकिस्तानी को नागरिकता नहीं

जम्मू-कश्मीर में एक नियम और रहा है। अगर कश्मीरी लड़की किसी पाकिस्तानी नागरिक से शादी कर लेती तो उसे जम्मू कश्मीर की नागरिकता मिल जाती थी। इस तरह पाकिस्तान के लोगों के लिए कश्मीरी नागरिक बनने का रास्ता खुला था, जबकि अन्य वर्ग, जाति व सम्प्रदाय की महिलाओं व पुरुषों को नागरिकता से हाथ धोना पड़ता था। अब किसी भी हाल में पाकिस्तानी को यहां की नागरिकता नहीं मिल सकती।

Happy Navratri

Kailash Chand Jain
Managing Director

KUNAL ENTERPRISES (P) LTD.

HOUSE OF QUALITY MARBLE

D/2 Udhyog Vihar, Sukher, Udaipur - 313 004 (Raj.)
(O): 2440262, Fax: +91-294-2440777, Mobile : +91-94141 60777
E-mail:marble_kunal@rediffmail.com

मेरे लिए तो यह 'डियर ज़िन्दगी' है

इन्हें अभिनय कला विरासत में मिली है। पापा शत्रुघ्न सिन्हा बॉलीवुड के नामचीन कलाकार हैं। फिर भला उनकी 'दबंग' बेटी अभिनय में अपनी अलग पहचान बनाने से कैसे पीछे रहती। फिल्मों में प्रवेश से लेकर आज तक फिल्म के किरदार को इस तरह जीवंत करती रही हैं, मानों वह फिल्म का नहीं बल्कि आम जनजीवन से ही कोई पात्र हो। वे हमेशा खुश रहती हैं और अपने को फिट रखती हैं। आप भी जानिए क्या कहती हैं, वे अपने बारे में –

- सोनाक्षी सिन्हा

फिटनेस का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से है। ज्यादातर लोग इसे शरीर के मोटा या दुबला होने से जोड़ लेते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। हर व्यक्ति की सेहत एक जैसी नहीं होती, लेकिन हर कोई फिट रह सकता है। शरीर और मन का स्वस्थ होना आवश्यक है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक सोच, अच्छा खानपान और व्यायाम जरूरी है। जब हमारा मन और शरीर दोनों ही बेहतर तरीके से बिना रुके सकारात्मक ऊर्जा के साथ काम करते हैं, तो हम ज्यादा फिट रहते हैं। शरीर को हमेशा सक्रिय रखना चाहिए और आलस से दूर रहना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने काम से प्यार करना चाहिए, क्योंकि जब हम काम से प्यार करते हैं, तो अपना शत-प्रतिशत उसे देते हैं। यह सफलता की गारंटी भी होता है। मैं फिट रहने के लिए सबसे पहले आहार का खयाल रखती हूं। हेल्दी फूड खाती हूं। हर दिन अलग अलग वर्कआउट करती हूं। कार्डियो, मिक्स मार्शल और योगा करती हूं। इसे करने से जहां शरीर का पॉस्चर बढ़िया होता है, वहीं हाथ और कंधे मजबूत होते हैं। मैं हमेशा फिटनेस के अलग-अलग प्रकार तलाश करती हूं और उसको प्रयोग भी करती रहती हूं। इससे मेरा मेटाबॉलिज्म रेट काफी बढ़िया है। यही मेरा फिटनेस मंत्र है। सूर्य नमस्कार से भी पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है। मुझे अभिनय करना अच्छा लगता है। कपड़े डिजाइन करना भी पसंद है और डांस तो मेरा फेवरेट है ही। डांस भी एक व्यायाम ही तो है।

जीवन एक उपहार की तरह है, जिसमें आने वाले दर्द और ट्विस्ट हमें आश्चर्यचकित करते हैं। यही वजह है कि मेरे लिए तो यह डियर जिंदगी है। क्योंकि मेरे साथ मेरी खुशी और गम में शामिल होने वाले दोस्त और फैमिली है, जो मुझसे बहुत प्यार करते हैं। जिंदगी बार बार नहीं मिलती। इसलिए मिली है, तो हमें बिना किसी शिकवा-शिकायत प्यार के साथ जीना चाहिए।

राजनैतिक परिदृश्य से ओझल होते वामदल

✍ जगदीश सालवी

सत्रहवीं लोकसभा के चुनावों (2019) में जहां भारतीय जनता पार्टी व उसके सहयोगी दलों की सीटों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ी है, वहीं सबसे ज्यादा घाटा वामपंथी दलों को उठाना पड़ा है। एक तरह से वह देश के राजनैतिक परिदृश्य से ओझल हो चुकी है। कभी देश में मुख्य विपक्षी दल रहे वामपंथी दलों का अपने प्रभाव वाले क्षेत्र पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व केरला में तो पूरी तरह सफाया हो गया है। तीनों प्रदेशों की कुल 64 लोकसभा सीटों में से कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ही केरला में एक सीट जीत पाई है जबकि वहां उसी की अगुवाई में वामदल सत्ता में है।

देश में सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ कांग्रेस कोई भी मोर्चा बनाती है, उसमें वामदल सदैव अगली कतार में खड़े दिखाई देते हैं।

संसद में भी वो कांग्रेस की आवाज में शामिल हो जाते हैं। प. बंगाल, त्रिपुरा और केरल में आज कांग्रेस वामदलों से ज्यादा ताकतवर है जबकि एक वक्त ऐसा भी था जब ये राज्य वामदल के मजबूत गढ़ माने जाते थे। अपने ही गढ़ों से धकियाये जाने के बावजूद ये सबक लेते नहीं लगते। वे प. बंगाल में फिर से कांग्रेस के पीछे चलने को तैयार हैं। दूसरी ओर भाजपा, माकपा व कांग्रेस को पीछे छोड़ तृणमूल कांग्रेस से मुकाबले में उसके सामने खड़ी है। वक्त का संकेत भी यही है कि बंगाल में मुख्य सियासी मुकाबला ही तृणमूल कांग्रेस व भाजपा के बीच होगा। पिछले लोकसभा चुनाव में माकपा के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे को प्रदेश की 42 सीटों में से एक भी सीट हासिल नहीं हुई। उसका वोट प्रतिशत गिरते-गिरते सिर्फ 7 प्रतिशत रह गया। इस स्थिति से उबरने वामदल दो साल बाद होने वाले राज्य विधानसभा चुनाव में अपनी संभावनाओं के आकाश को विस्तार देने के लिए कांग्रेस से हाथ मिलाने को उत्सुक हैं यदि वाम नेता अपना और पार्टी का अस्तित्व बचाना चाहते हैं तो उन्हें अलग रास्ता बनाते हुए चलना होगा। पुरानी पहचान कायम करने के लिए पार्टी को बंद कमरों से निकाल कर सड़क पर खड़ा करना होगा और जनता के साथ जुड़कर उनकी समस्याओं के लिए संघर्ष का संकल्प व्यक्त करना होगा।

स्वतंत्रता के बाद शुरुआती तीन दशकों के दौरान देश के तमाम राज्यों में वाम दलों ने अपनी ठोक-ठाक उपस्थिति दर्ज कराई थी। वर्ष 1951-52 के प्रथम आम चुनाव में अविभाजित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी यानी भाकपा ने 16 सीटें जीती थीं। वर्ष 1962 के चुनाव में 9 प्रतिशत वोटों के साथ सीटों की संख्या बढ़कर 29 हो गई। इसके बाद नेताओं के बीच वर्चस्व के संघर्ष के चलते पार्टी का विभाजन हुआ और भाकपा के अलावा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) यानी माकपा अस्तित्व में आई।

दोनों पार्टियों ने 1967 में कुल 42 सीटें हासिल कीं, लेकिन मत प्रतिशत 9 फीसद पर ही स्थिर रहा। करीब तीन दशक यही सिलसिला रहा। इनका शानदार और प्रभावी संयुक्त प्रदर्शन 2004 में रहा, जब दोनों ने लोकसभा की 53 सीटें अपनी झोली में डाली। हालांकि वोट प्रतिशत गिरकर 7 फीसद रह गया। इसके बाद वामदलों के सितारे गर्दिश में चले गए। वर्ष 2014 में दोनों

पार्टियों ने केवल 10 सीटें हासिल कीं और उनका वोट प्रतिशत खिसककर 4 फीसद रह गया। पिछले लोकसभा चुनाव(2019) में तो इनका अस्तित्व खतरे के निशान को छूने लगा। मात्र 5 सीटों पर संतोष करना पड़ा। राष्ट्रीय स्तर पर वोट प्रतिशत भी 2 फीसद रह गया। 2004 में वामदलों की सफलता का उच्चतम बिन्दु था जबकि 2019 ने उनके पतन की भूमिका लिखी।

वामदलों को पूर्व में दो ऐसे अवसर मिले थे, जब वे पंख फैलाकर पुरजोर उड़ान भर सकते थे, लेकिन गंवा दिए। सन् 1996 में ज्योति बसु के प्रधानमंत्री बनने के अवसर को उन्होंने खो दिया, जिसका बंगाल की जनता को भी आज तक मलाल है, किन्तु इससे भी बड़ी चूक 2004 में तब हुई जब इन दलों ने आग्रह के बावजूद यूपीए को मनमोहन सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया। यदि वामपंथी सरकार में शामिल हुए होते तो पूरे देश में पार्टी का कद दिखाईदेता और इन्हें आम आदमी के नजदीक जाने व उनके जीवन स्तर में सुधार का मौका मिलता। किन्तु अपने मुंह पर मजबूती से चिपका लेनिनवादी मुखौटा ये अलग नहीं कर पाए, नतीजतन 2004 की ऊंचाई से 2019 की निम्नता तक आ गिरे। ये दोनों दल त्रिपुरा और प. बंगाल में सत्ता से बाहर हैं और यहां फिर से इनका सत्ता में आना हाल-फिलहाल संभव नहीं दिखता। कांग्रेस से गलबहियां करते रहे ये दल जब केरल में अगली चुनाव होंगे तो वहां भी उल्टे पांव लौटते दिखेंगे और कांग्रेस सत्ता में होगी।

जहां तक वामदलों के घटते जनाधार का सवाल है, उसका एक मुख्य कारण अपनी मूल विचारधारा व जन संघर्ष से दूर होकर सुविधा भोगी बन जाना है।

कांग्रेस की हर बात का आंख मूंदकर समर्थन करने से उसकी छवि कांग्रेस के पिछलग्गू सी बन गई है। केरल में वायनाड संसदीय क्षेत्र से राहुल गांधी के चुनाव जीतने से वामपंथियों के वोटों का कांग्रेस के पक्ष में ध्रुवीकरण हो चुका है। पिछले तीस वर्षों से ये दल छद्म धर्मनिरपेक्षता का झण्डा उठाए दिखने लगे हैं। इन्हें हिन्दू बहुसंख्यक कुटी आंख नहीं सुहाते और इस्लामिक चरमपंथ इन्हें कोई मुद्दा नहीं दिखता। इन्हें यदि अपना वजूद बचाना है तो अपने सिद्धान्तों, कार्यक्रमों और उद्देश्यों पर फिर से विचार करते हुए आम जनजीवन के साथ घुलना-मिलना होगा

स्वादिष्ट और पौष्टिक भुट्टे का स्वाद

बारिश की रिमझिम में अंगीठी पर सिकते मौसमी भुट्टे के स्वाद का कहना ही क्या? नमक-नींबू लगे गरम भुट्टे का स्वाद तो क्लासिक है ही, इसकी कई ऐसी डिशेज भी है, जिसके चटखारे आप शायद ही कभी भूल पाएं। इन दिनों बाजार में भुट्टे की बहुतायत है। प्रस्तुत है भुट्टे के दानों से बनने वाले कुछ खास आसान व्यंजन।

✍ प्रेमलता नागदा

भुट्टे की खीर

सामग्री : अच्छे नरम और दुधिया दानों वाले 8 भुट्टे, दूध 2 लीटर और चीनी 100 ग्राम या स्वाद के अनुसार, मन पसंद मेवे और केसर अंदाज से।

विधि : दूध उबलने रख दें और भुट्टों को धो साफ करके किस लें। जब दूध खौलने लगे तब भुट्टे को किस डाल कर हिलाती चलाती रहें। जब दूध लगभग आधा रह जाए तब चीनी डाल कर थोड़ी देर और उबालें ताकि शक्कर ठीक से घुल जाए। अब उतार कर केसर, छोटी इलायची के दाने, किशमिश, चिरौंजी आदि काट कर डाल दें और उतार लें। बस, भुट्टे की स्वादिष्ट और पौष्टिक खीर तैयार है। यह ख्याल रखें, भुट्टों के दाने जितने नरम व दुधिया होंगे, खीर उतनी ही स्वादिष्ट और बढ़िया बनेगी।

भुट्टे का हलवा

सामग्री : भुट्टे 1 किलो, घी 200 ग्राम, शक्कर 250 ग्राम, मावा 100 ग्राम और मेवा अंदाज से।

विधि : भुट्टे किस लें, कड़ाई में घी डालकर गरम करें (कड़ाई लोहे की न हो, स्टील या हिण्डोलियम की हो)। घी में किस डाल कर गुलाबी सेक लें। जब घी छूटने लगे तब मावा डाल कर, बाद में शक्कर डाल दें और खूब हिला चला कर मिला लें। पिसी हुई इलायची, कटी हुई काजू व किशमिश अंदाज से डालकर ढंक दें और मंदी आंच पर सेकें। बस भुट्टे का हलवा तैयार है।

भुट्टे की उपमा

सामग्री : जितने भुट्टे लेना चाहें सो खाने वालों की संख्या के हिसाब से ले लें। सब मसाले हरा धनिया, सौंफ, खोपरा, नींबू आदि अंदाज से।

विधि : भुट्टों को किस कर अच्छे तेल में बघार लें। बघार में हींग, जीरा व इलायची डालें। धीमी आंच पर चढ़ा कर भूनें। अच्छी सिक जाने पर नमक, काली मिर्च, गर्म मसाला, सौंफ, बारीक कटा हुआ हरा धनिया, एक छोटी चम्मच भर शक्कर और थोड़ा सा दूध डाल दें। 5–10 मिनट तक मंदी आंच पर रखा रहने दें। जब गाढ़ा होने लगे उतार कर गरमा-गरम ही प्लेटों में परोस कर, उस पर नारियल का बूरा बुरक दें व नींबू काट कर निचोड़ दें। इच्छानुसार थोड़ा प्याज काटकर डाल दें। बहुत ही स्वादिष्ट व्यंजन है

भुट्टे के भजिये

सामग्री : भुट्टे 1 किलो, बेसन 200 ग्राम, नमक, मिर्च, हल्दी, जीरा, अजवायन, सौंफ, हरा धनिया, हरी मिर्च, शक्कर सब अंदाज से। प्याज 2, मीठा तेल 250 ग्राम।

विधि : भुट्टे साफ कर किस लें। इसमें बेसन व शक्कर मिला कर मसाले अंदाज से डाल लें। हरी मिर्च, हरा धनिया और प्याज बारीक काट कर मिला लें। इसे भजिये के घोल जैसा तैयार कर कड़ाई में तेल गरम कर भजिये तल कर निकाल लें। गरमा-गरम परोसें। वर्षा ऋतु में यूं भी भजिये खाने की इच्छा होती है सो इस बार भुट्टे के भजिये ही बनाएं और इनका आनंद लें, लेकिन इन्हें भोजन की तरह नहीं बल्कि बतौर नाश्ते के रूप में अल्प मात्रा में खाएं।

- दीपक मेनारिया 'दीपू'

सुनील रोती रात से करवट पर करवट ले रहा था, उसे किसी भी तरह सुबह होने का इंतजार था, आँखों से नींद कोसों दूर जा चुकी थी। उसे उम्मीद थी कि कल का सूरज उसके जीवन में नया सवेरा लायेगा क्योंकि कल सुबह उसका आईआईटी का परिणाम आने वाला था।किन्तु किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। सुबह होने पर सुनील का मुंह लटक गया था। परिणाम आया, वह क्वालीफाई नहीं कर सका था। बड़े भाई ने उसको मनोदशा देख कर प्यार से कहा, तुम परीक्षा में असफल हो गए, इस बात पर इतना अधिक दुःख क्यों?

भैया, तैंने दिन-रात मेहनत की, आपका कितना पैसा खर्च हो गया और ये परिणाम आया? मैं बहुत शर्मिंदा हूं भैया, सुबकते सुनील ने कहा। बचपन में पापा के गुजरने के बाद आज तक आपने मुझे उनकी कमी महसूस नहीं होने दी और मैंने आपको यह परिणाम दिया। मेरा जीवन अब अंधकार से भर गया है, मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं किसी काम का नहीं। 'लेकिन मुझे बिलकुल भी दुःख नहीं है। बल्कि मैं तो खुश हूं,' भैया ने अपने चेहरे पर मुस्कराहट लाते हुए कहा। सुनील को बहुत आश्चर्य हो रहा था।

तुम्हें मालूम है सुनील, आज देश में बेरोजगार इंजीनियरों की संख्या लाखों में है। मुझे भी अंदर ही अंदर चिंता सताये जा रही थी कि तुम भी उस सूची में शामिल न हो जाओ। मेरी वह चिंता अब खत्म हो गई। इस परीक्षा से तुम्हारा दाखिला बड़े इंजीनियरिंग कॉलेज में होता। सोचो, कितना खर्च कर तुम बेरोजगार इंजीनियर बनते तो तुम्हें कितना दुःख होता। दाखिले के बाद मेरी दिन रात मेहनत का पैसा लगता और फिर तुम बेरोजगार होकर नौकरी के लिए यहाँ से वहां भटकते रहते।

भैया, सुनील को बहुत ही प्रेम, स्नेह एवं गंभीरता से समझा रहे थे और सुनील के सामने से जैसे एक-एक कर किताब के सारे पन्ने पलट रहे थे। अच्छा हुआ जो तुम्हारा उस परीक्षा में दाखिला नहीं हुआ। तुम्हारे पास अब मौका है कि तुम अपना बिजनेस करो। बड़े और सफल बिजनेसमैन बनो। आज सभी युवा बिजनेस में ही आगे बढ़ रहे हैं। तुम भी अपना एवं औरों का भविष्य सुरक्षित करो। एक नया सवेरा तुम्हारा इंतजार कर रहा है। रोओ मत और जीत अपनी मुट्ठी में कर लो।

सुनील को अंधकार में नया सवेरा खिलता दिखा और वह पहले से ज्यादा मजबूत लगा।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

ऊर्जा से परिपूर्ण होने से रुकी कार्यों में आपकी दिलचस्पी रहेगी लेकिन अति आत्मविश्वास में परेशानियाँ बढ़ भी सकती हैं, खर्च की अधिकता रहेगी, भाग्य के भरोसे काम न करें। सन्तान पक्ष से खुशियां मिल सकती हैं, स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। नौकरीपेशा जातकों को कार्य की अधिकता

वृषभ

आपके रचनात्मक एवं कलात्मक कार्यों को प्रशंसा मिलेगी, परिवार में उत्साह का माहौल रहेगा, आय के नये स्रोत बनेंगे, नौकरी में स्थान परिवर्तन एवं व्यवसाय में साझेदारी लाभदायक रहेगी, लम्बी दूरी की आकस्मिक यात्रा सम्भव, संतान पक्ष से हर्ष, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव, माह का उत्तरार्द्ध सुकूनदायी रहेगा।

मिथुन

मानसिक अस्थिरता के कारण कोई भी कार्य ढंग से सम्पादित नहीं कर पायेंगे। माह का उत्तरार्द्ध आपको राहत प्रदान करेगा, वाहन आदि चलाने में सावधानी बरतें, व्यवसाय में मजबूती आएगी, पिता व भाई-बहिनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, लेकिन दाम्पत्य जीवन में कड़वाहट का अनुभव होगा।

कर्क

संवाद में कुशलता आपका मजबूत पक्ष है। कार्य क्षेत्र में समय भी पक्ष का बना है, भरपूर लाभ उठाएं। यात्रा योग बनेंगे, महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात होगी जो आगे फायदेमंद सिद्ध होगी। आय के नये स्रोत खुल सकते हैं, जिससे आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, जीवन साथी से सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध सुकूनदायी होगा एवं ऊर्जावान बने रहेंगे। भौतिक सुख में वृद्धि होगी। भूमि विवाद में फंस सकते हैं, धार्मिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी, गुप्त शत्रु सक्रिय हो सकते हैं, अपनी ऊर्जा का उपयोग व्यर्थ के कार्यों में न करें। इससे बचें। आर्थिक पक्ष में अकस्मात परिवर्तन सम्भव एवं पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

कन्या

यह माह सामान्य प्रतीत होता है, सन्तान पक्ष से कठिनाई उत्पन्न हो सकती है, जल्दबाजी में कोई कार्य न करें वरना मुसीबत में फंस सकते हैं। धन के लेन देन में सावधानी आवश्यक है, क्रोध पर नियंत्रण रखें। व्यावसायिक कार्यों में सक्रियता बढ़ेगी, आर्थिक पक्ष से परेशानी एवं उदर सम्बन्धी रोग तकलीफ दे सकता है।

तुला

माह का उत्तरार्द्ध आर्थिक मजबूती दिलाएगा, अनावश्यक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। मित्रों का सहयोग लाभ दिलाएगा, धार्मिक कार्यों में दान दें जिससे आगे की स्थिति सुधरेगी, कार्य क्षेत्र में विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता है, साझेदारी लाभ दिला सकती है, वैवाहिक जीवन में सामंजस्य घट सकता है।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
2 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 4	गणेश चतुर्थी
3 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 5	ऋषि पंचमी/संवत्सरी
5 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 7	शिक्षक दिवस
6 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 8	दुर्गाष्टमी/राधाष्टमी
8 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 10	रामदेव जयंती/तेजा दशमी
9 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 11	जलझूलनी एकादशी
12 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 14	अनन्त चतुर्दशी
14 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल 15	प्रतिपदा श्राद्ध/हिन्दी दिवस
28 सितम्बर	आश्विन कृष्णा 30	भगतसिंह जयंती/सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध
29 सितम्बर	आश्विन शुक्ल 1	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ/अग्रसेन जयंती

वृश्चिक

कार्य क्षेत्र में आप नये आयाम स्थापित कर सकते हैं। आपकी आदत आपके नैतिक ताने-बाने को कमजोर कर सकती है, जिससे रिश्तों में दूरियां बढ़ सकती हैं। पुराने किये गये निवेश का उचित लाभ मिल सकेगा, जिससे आर्थिक समस्याएं दूर होंगी। नये रोग परेशान कर सकते हैं।

धनु

कल्पना से बाहर यथार्थ में जीवन जीयें, आपकी नई सोच एवं विचार नए कार्यों का सृजन करेंगे, आपकी तार्किक बातों से लोग प्रभावित होंगे, भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलेगा। माह का पूर्वार्द्ध आर्थिक परेशानी दे सकता है, नौकरीपेशा जातकों का स्थानान्तरण संभव, व्यवसाय में उन्नति के संकेत मिलेंगे।

मकर

आपका गुस्सा आपको हानि एवं सम्बन्धों में दरार पैदा कर सकता है। सन्तुष्ट जीवन के लिए मानसिक दृढ़ता की आवश्यकता है। सामाजिक कार्यों में उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी, वाणी का प्रयोग चतुराई से करें, आलस्य के कारण कार्य अधूरा छोड़ने की आदत पर काबू पाएं, कार्य क्षेत्र सामान्य रहेगा।

कुम्भ

क्रोध की अधिकता पर नियंत्रण करें, वरना विरोधियों की संख्या बढ़ सकती है, अपने से वरिष्ठजनों का सानिध्य प्राप्त करें एवं उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें, झूठी शान और शौकत आपकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकती है, आर्थिक पक्ष में सुधार रहेगा, व्यवसाय में गिरावट सम्भव।

मीन

मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, मित्रों का सहयोग काम आएगा। दैनिक कार्य में अड़चन महसूस होगी। दीर्घावधि में कामकाज के सिलसिले में की गई यात्राएं फायदेमंद होंगी। यह समय कुछ नया करने का है, उचित निर्णय लेकर कदम बढ़ाएं। नौकरी में प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे।

जीबीएच ने जीता विश्वास : डॉ. कीर्ति

डॉ. कीर्ति जैन स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए।

उदयपुर। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. कीर्ति जैन ने कहा कि तेरह साल में जीबीएच पर ९ लाख लोगों ने इलाज के नाम पर विश्वास किया है। गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा के कारण यह आंकड़ा साल दर साल बढ़ता मिलेगा। डॉ. जैन गत दिनों हॉस्पिटल के स्थापना दिवस समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 13 साल पहले इस शहर में चिकित्सा के नाम पर सिर्फ सरकारी हॉस्पिटल था। निजी क्षेत्र के इस पहले कॉरपोरेट हॉस्पिटल की स्थापना का उद्देश्य ही गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा मुहैया कराना था। इस मौके पर रंगारंग कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम में डॉ. पीयूष गर्ग ने गिटार वादन, डॉ. कमलेश भट्ट ने गीत, डॉ. अनुराग जैन ने कविता की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में डायरेक्टर डॉ. सुरभि पोरवाल, डीन डॉ. विनय जोशी, सीईओ डॉ. यतिन तलदार मौजूद थे।

राजस्थान फाउंडेशन के धीरज चेयरमैन

जयपुर। राज्य सरकार ने सेवानिवृत्त आरएएस धीरज श्रीवास्तव को राजस्थान फाउंडेशन का चेयरमैन बनाया है। धीरज कुमार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी के नजदीकी रहे हैं। वे यूपीए की चेयरपर्सन सोनिया गांधी व बाद में प्रियंका गांधी के भी ओएसडी रहे। 1994 बैच के आरएएस धीरज कुमार 1999-2003 के बीच गहलोत के भी ओएसडी रहे। प्रदेश में सरकार बदली तो धीरज केन्द्र में मनमोहन सिंह सरकार में प्रधानमंत्री कार्यालय में प्रतिनियुक्ति पर चले गए। उनका कार्यालय नई दिल्ली स्थित बीकानेर हाउस रहेगा।

शर्मा सम्मानित

डूंगरपुर। शिक्षा एवं जनजाति विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए राजस्थान बाल कल्याण समिति के प्रबंध निदेशक गिरजाशंकर शर्मा को विश्व आदिवासी दिवस पर बेणेश्वर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में सम्मानित किया गया। इस मौके पर जनजाति मंत्री अर्जुन बामणिया व पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा ने जनजाति समाज की अन्य प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया।

लायंस क्लब प्रताप को चार्टर

राजीव सुराणा

मालु गाला

उदयपुर। लायंस क्लब प्रताप का सामूहिक पदस्थापना समारोह में लायंस क्लब प्रताप के 37 नए सदस्यों को शपथ दिलाकर क्लब की सदस्यता प्रदान कराई गई। अध्यक्ष मालु गाला व सचिव राजीव सुराणा को चुना गया। जोन चेयरमैन सुनील मेहता भी मौजूद थे।

डॉ. सीमा चम्पावत अध्यक्ष बनीं

उदयपुर। जैन समाज के महिला संगठन दशा हुमड़ जैन महिला परिषद सर्वश्रेष्ठा ने महिला परिषद की साधारण सभा में डॉ. सीमा चम्पावत को अध्यक्ष मनोनीत किया।

नया गारमेंट शोरूम

उदयपुर। शहर में विगत 25 से अधिक वर्षों से व्यावसायिक प्रतिष्ठान सुनील टेक्सटाईल्स, सुनील मर्चेन्डाइज एवं काशी साड़ीज ने सेक्टर 11 स्थित पारस हाउस में गत दिनों नए शोरूम का शुभारम्भ किया। यहां सूटिंग-शर्टिंग, बेडशीट, शॉल, इथनिक वियर, मोन्टी कार्लो ड्यूक, ऑक्सेमबर्ग, विमल, मफतलाल, यूनाइटेड क्राफ्ट, लिनन क्लब, रेमण्ड, जे हेम्पस्टेड, अरविन्द जैसी कई और ब्रांड्स मौजूद हैं। साथ ही साड़ी, लहंगा, कुर्ती, इन्डोवेस्टर्न और इवनिंग गाउन की विस्तृत रेंज ग्राहकों के आकर्षण का केन्द्र रहेगी।

175 यूनिट रक्त संग्रहण

उदयपुर। रोटरी क्लब उदयपुर हेरिटेज, महावीर इंटरनेशनल, सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट, जैन सोशल ग्रुप उमंग एलिट व उदयपुर अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक के संयुक्त तत्वावधान में गत दिनों रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। क्लब अध्यक्ष जितेन्द्र नलवाया ने बताया कि शिविर में आयोजक संगठनों के सदस्यों के रक्तदान से 175 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। जिनमें से 83 यूनिट महाराणा भोपाल चिकित्सालय के ब्लड बैंक में व शेष यूनिट पेसिफिक ब्लड बैंक में दिया गया। कार्यक्रम में क्लब सचिव शैलेश सिंघल, दीपक शर्मा, दीपक भंसाली, हिमांशु चौधरी, राहुल भटनागर, अंकुर सापला, कमलेश गांधी, फखरुल हुसैन, आशीष कोठारी, मनु बंसल, महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष रणजीत सिंह सोजतिया, जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष रवि बरोला, सोजतिया चेरिटेबल ट्रस्ट के नरेन्द्र सोजतिया, एलएफएडी से कांति भट्ट व अन्य, उदयपुर अर्बन को ऑपरेटिव के कुंदन टीन वाला आदि मौजूद थे।

तीन हजार छात्राओं को लेपटॉप

उदयपुर। वेदांता स्नातकोत्तर महाविद्यालय रिंगस की 3000 छात्राओं को पिछले दिनों लेपटॉप दिए गए ताकि वे वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा और ज्ञान में और बढ़ोतरी कर सके। रिंगस कॉलेज में हुए समारोह में मुख्य अतिथि पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. एल. शर्मा, हिन्दुस्तान जिंक की चेयरपर्सन एवं वेदांता फाउंडेशन की ट्रस्टी किरण अग्रवाल एवं ट्रस्टी सुमन डीडवानिया ने छात्राओं को लेपटॉप दिए।

अंशिका को 7वीं रैंक

उदयपुर। द इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेट्रीज ऑफ इंडिया (आईसीएसआई) द्वारा पिछले दिनों आयोजित सीएस फाउंडेशन परीक्षा में उदयपुर की अंशिका झा ने 344 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंकिंग में 7वां और उदयपुर जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। अंशिका ने अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता प्रवेन्द्र कुमार एवं माता ज्योति तथा अंकुला क्लासेज के गुरुजनों को दिया है।

डॉ. छतलानी सम्मानित

उदयपुर। आई ब्लॉगर की ओर से राष्ट्रीय स्तर का वर्ष 2019 का ब्लॉगर ऑफ द ईयर सम्मान उदयपुर के डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी को दिया गया। डॉ. छतलानी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ में सेवारत हैं। हिन्दी लघुकथा पर आधारित ब्लॉग लघुकथा दुनिया के सफल संचालन को लेकर डॉ. छतलानी को अवार्ड के लिए चुना गया है।

इनरव्हील शपथ ग्रहण

उदयपुर। इनरव्हील क्लब का पदस्थापना समारोह कविता गांव में हुआ। इसमें अध्यक्ष रेखा भाणावत, सचिव सुन्दरी छतवानी, आशा नलेरिया, सुरजीत डांगड़ा, पुष्पा सेठ, सावित्री शाह ने शपथ ली। मुख्य अतिथि इनरव्हील एसोसिएशन की पूर्व अध्यक्ष सरिता कुमारी थीं।

यूनाइटेड राउंड टेबल चुनाव

उदयपुर। यूनाइटेड राउंड टेबल की 27वीं वार्षिक बैठक गत दिनों आयोजित की गई। जिसमें वर्ष 2019-20 के लिये हुसैन मुस्तफा अध्यक्ष एवं नवदीप सिंह सचिव चुने गये। चुनाव में पर्यवेक्षक दीपेश कोठारी थे। नई कार्यकारिणी में वाइस चेयरमैन परितोष मेहता, कोषाध्यक्ष सौरभ बापना एवं निवर्तमान चेयरमैन सौरभ जैन चुने गये।

किआ मोटर्स की सेल्टोस लॉन्च

उदयपुर। चार पहिया वाहन निर्माता किआ मोटर्स इंडिया की ओर से हिरणमगरी सेक्टर 6 स्थित राजेश किआ मोटर्स प्रा. लि. पर नई गाड़ी सेल्टोस लॉन्च हुई। पार्टनर राहुल शाह ने बताया कि यह गाड़ी ग्राहकों को अद्वितीय कार के स्वामित्व का अनुभव प्रदान करेगी। इसे देश के 160 शहरों के 265 टच पॉइन्ट पर एक साथ बड़े नेटवर्क के साथ लॉन्च किया गया। ये डीजल व पेट्रोल वेरिएंट में उपलब्ध है।

अल्पसंख्यक मंत्री से भेंट

उदयपुर। परोपकार सेवा संस्थान के सदस्य मुकेश मुण्डलिया ने नई दिल्ली में अल्पसंख्यक मामलों के केन्द्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी एवं राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग की पूर्व सदस्य लिलियन ग्रेस से मिलकर जैन समाज को अल्पसंख्यकों की सुविधाओं पर चर्चा की।

शिक्षकों को 'गुरु श्रेष्ठ' सम्मान

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक सेंटर व 93.5 एफएम-तड़का के सौजन्य से गत दिनों 'गुरु श्रेष्ठ सम्मान' आयोजित हुआ। जिसमें शिक्षा एवं कला जगत से सम्बद्ध 30 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को जिन विशिष्ट हस्तियों का सान्निध्य मिला, उनमें नगर परिषद-डूंगरपुर के सभापति के. के. गुप्ता, अर्थ डायग्नोस्टिक सेंटर के डॉ. अरविन्द सिंह, सोजतिया ग्रुप की साक्षी सोजतिया, एसआरएम ग्रुप के हिम्मत सिंह झाला, आरनोल्ड्स फिटनेस क्लब के घनश्याम शर्मा, राजस्थान पत्रिका के स्थानीय सम्पादक संदीप पुरोहित, संयुक्त निदेशक-स्कूली शिक्षा भरत मेहता व श्रीजी स्टडी सेंटर के मनीष गोकालिया, रेडिसन ग्रीन जीएम विपुल गोयल थे। कार्यक्रम आरएसडीएफ डांस एकेडमी की परफॉर्मेंस विशेष आकर्षण थी। पत्रिका के डीजीएम अरुण शाह, ब्रांच मैनेजर प्रिंस जगावत और 93 एफएम तड़का के योगेश नागदा ने अतिथियों का स्वागत किया।

28 चिकित्सा शिक्षकों को प्रशिक्षण

उदयपुर। पैसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में मेडिकल काउंसिल ऑफ इण्डिया के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के निर्देशानुसार इस वर्ष प्रवेश पाने वाले एमबीबीएस बैच के लिए नवीन पाठ्यक्रम (कम्पीटेन्सी बेस्ड मेडिकल एजुकेशन) लागू करने हेतु तीन दिवसीय वर्कशॉप हुई। वर्कशॉप के कॉर्डिनेटर डॉ. एल. सी. छाबड़ा थे। डॉ. भावेश जरवानी के पर्यवेक्षण में 28 चिकित्सा शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली को अपग्रेड करने के लिए आठ सत्रों में भिन्न-भिन्न विषयों पर ऑडियो वीडियो एवं विभिन्न मॉड्यूल के माध्यम से सिखाया गया।

इस वर्कशॉप में पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. ए. पी. गुप्ता, प्रोफेसर डॉ. जी. सी. अग्रवाल, प्रोफेसर डॉ. अमिताभ कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. गौरव छाबड़ा एवं डॉ. जगदीश विश्नोई ने शिक्षकों को नए पाठ्यक्रम को लागू करने की विधियों से रूबरू कराया

फोर्टी का शपथ ग्रहण

उदयपुर। राजस्थान ट्रेड फेडरेशन ऑफ इंडिया (फोर्टी) उदयपुर का चतुर्थ शपथग्रहण समारोह गत दिनों आयोजित किया गया। जिसमें नवनिर्वाचित अध्यक्ष पलाश वैश्य एवं उनकी कार्यकारिणी ने शपथ ग्रहण की। समारोह के मुख्य अतिथि महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, शपथ प्रदाता राजस्थान फोर्टी के महासचिव महेश काला एवं मुख्य वक्ता इस्कॉन के महंत गोविन्द दास थे। फोर्टी के महासचिव महेश काला ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष पलाश वैश्य, महासचिव शरद अग्रवाल, लक्ष्मीकान्त पौराणिक, नवदीप सिंह, राजन वर्मा, निशान्त शर्मा को शपथ दिलाकर पदस्थापित कराया। पिछले तीन वर्ष में निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण सुथार के नेतृत्व में अनेक कार्य सम्पन्न हुए, जिनकी प्रशंसा की गई।

सिंडीकेट बैंक का रोड शो

उदयपुर। सिंडीकेट बैंक की योजनाओं के प्रचार के लिए गत दिनों शहर में रोड शो किया गया। क्षेत्रीय प्रबंधक कमलेश जैन की देखरेख में रोड शो का आयोजन गुलाब बाग से सूरजपोल, बापू बाजार होकर दिल्ली गेट तक किया गया। रोड शो में उप क्षेत्रीय प्रबंधक मदन सिंह रावत, ग्राहक, सेवानिवृत्त कर्मचारी, पिग्मी एजेंट्स व बैंक स्टाफ ने भाग लिया। रोड शो के संयोजक विपणन अधिकारी आनंद सिंह व गौरव ने प्रतिभागियों का आभार जताया।

एमजी कॉलेज को 30 बेंच भेंट

उदयपुर। लायंस क्लब उदयपुर द्वारा राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय की छात्राओं के लिए 30 बेंचों का लोकार्पण गत दिनों किया गया। क्लब अध्यक्ष कीर्ति जैन ने बताया कि क्लब द्वारा शहर में विभिन्न सेवा कार्य किए जा रहे हैं।

समारोह में पूर्व प्रांतपाल चंचल गोयल, आर एल कुणावत, अनिल नाहर, क्लब सचिव लोकेन्द्र कोठारी, पूर्व अध्यक्ष लॉयन आशीष हरकावत, लॉयन पूनम लोढ़िया, लायन राजेश खमेसरा, लॉयन गुणवंत वागरेचा, लॉयन ओम प्रकाश अग्रवाल, कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. मधु मथारू मौजूद थे।

अशोक को एचीवमेन्ट अवार्ड

उदयपुर। ऑल इंडिया हेयर एण्ड ब्यूटी एसोसिएशन के महासचिव अशोक पालीवाल को नागपुर में आयोजित समारोह में लाइफ टाइम एचीवमेन्ट अवार्ड दिया गया। उल्लेखनीय है कि ब्यूटी एण्ड हेयर उद्योग में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए बॉलीवुड मेकअप आर्टिस्ट सुभाष शिन्दे, जमील दोशी, सैलून मैनेजमेन्ट गुरु शाहनवाज सहित आयोजक प्रदीप मोरेकर ने सम्मानित किया।

सेवा का सम्मान

उदयपुर। समाज सेवा का भाव मन से हो तो इससे बढ़कर कोई काम नहीं। यह बात गत दिनों महावीर इंटरनेशनल की मासिक बैठक में मुख्य अतिथि नगर परिषद डूंगरपुर के सभापति के. के. गुप्ता ने कही। इस मौके पर संस्था की स्मारिका और टेलीफोन डायरेक्टरी का विमोचन किया गया। स्वच्छता और हरियाली में उत्कृष्ट कार्य करने और डूंगरपुर शहर को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने पर गुप्ता का सम्मान किया गया। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल के अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष राज लोढ़ा, अध्यक्ष आर एस सोजतिया भी मौजूद थे।

एमपीवी एक्सएल 6 लॉन्च

उदयपुर। मारुति सुजुकी नेक्सा की प्रीमियम एमपीवी एक्स एल 6 को गत दिनों नवनीत मोटर्स में लॉन्चिंग हुई। बतौर अतिथि केबीसी में 6.40 लाख रुपए जीतने वाली सरोज सिसोदिया, नवनीत नेक्सा निदेशक सौभाग्य नारायण, ललित नारायण माथुर तथा सरोज के पति महेन्द्र सिंह भी मौके पर मौजूद थे। शोरूम मैनेजर नरेश शर्मा ने बताया कि कार छह रंगों में उपलब्ध होगी। कार में 6 सीटें मुहैया करवाई गई हैं।

लायन्स क्लब महाराणा का पदस्थापन

उदयपुर। लायंस क्लब महाराणा का पदस्थापना समारोह गत दिनों सम्पन्न हुआ। इसमें उप प्रांतपाल प्रथम संजय भण्डारी ने नई कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। अध्यक्ष अरविन्द लालो, सचिव सुशील समदानी, कोषाध्यक्ष कमलेश देवपुरा आदि ने शपथ ली।

फास्ट फूड रेस्टोरेंट का शुभारम्भ

उदयपुर। पिछले दिनों विश्वविद्यालय मार्ग पर श्रीलाला कचौरी फास्ट फूड रेस्टोरेंट का शुभारम्भ हुआ। सूरजपोल के बाद यह इनकी दूसरी ब्रांच है। फर्म के प्रोपराइटर लालाराम साहू, सावन साहू, जितेन्द्र साहू व मनीष साहू ने अतिथियों का स्वागत किया।

शोक समाचार

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर श्री महावीर जी वर्मा का 21 अगस्त को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र डॉ. सतीश, सुधीर वर्मा (उपनिदेशक, कृषि विभाग) पुत्रियां श्रीमती सुमन, शशि व सुधा सहित सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती चोसर देवी जालौरीया धर्मपत्नी स्व. त्रिलोक चंद जालौरीया का 23 जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र ऋषभ, पुत्रियां मैना, रंजना, आशा, प्रेमलता व रेखा सहित पौत्र पौत्रियों तथा दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। हजानी आतिका बाई कुराबड़ वाला का 15 जुलाई को इन्तकाल हो गया। वे अपने पीछे ग़मजदा पति हाजी अब्बास अली कुराबड़ वाला, पुत्र इंजी. अली असगर व हुजेफा, पुत्रियां सकीना दसोर वाला, नफीसा बंदूकवाला तथा मुनीरा कनवाला व उनका समृद्ध परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। हाजी कमरुद्दीन मोडागाव वाला का 6 अगस्त को इंतकाल हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल शब्बीर हुसैन, खुर्शीद हुसैन, फिरोज अली, शजाउद्दीन हबीब, अख्तर अली तथा भरपूर मोडागांव वाला परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती विद्या देवी धर्मपत्नी स्व. लीलाराम जी (खत्री) चावला का 1 जून, 2019 को निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र सुरेश खत्री, अशोक खत्री, राकेश खत्री एवं दर्शन नारंगा सहित पौत्र-पौत्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

अरिहन्त वाटिका

45,000 वर्ग फीट का हरा-भरा लॉन, आकर्षक विद्युत सज्जा

पार्किंग की
पूरी व्यवस्था

मीठे पानी
की सुविधा

12 कमरे व
2 हॉल उपलब्ध

मो.: 9414902400, 9414166467

सेन्ट ग्रिगोरियस स्कूल के पीछे, शनि महाराज मन्दिर के सामने, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर

KTH

कमल भावसार
94141 57241
96360 50631

कमल टेन्ट हाऊस

बेस्ट वर्क, चुन्नी डेकोरेशन, टेन्ट, लाईट डेकोरेशन, केटरिंग मंडप

फ्लॉवर स्टेज एवं शादी-पार्टी
सम्बंधित कार्य किए जाते हैं।

किराये पर गार्डन सुविधा उपलब्ध है।

Email- kamleshbhavsar25@gmail.com
Visit us: www.kamaltenthouse.in

आकार कॉम्पलेक्स के सामने, युनिवरसिटी मेन रोड, उदयपुर

Happy Navratri

Suresh Suthar
96606 38290

Prakash Suthar
98871 07530

DOLATRAM
ENTERPRISES

PLYWOOD **HARDWARE** **LAMINATES**

Near Swagat Vatika, 100ft. Road
Sec-4, Hiran Magri, Udaipur (Raj.)

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327 001 (RAJ)
Ph.+91-2962-27676,79-81,257195-97
Fax.+91-2962-240692
Email:info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI -4000 02
Phoe:+91-22-66336571-76
Email:info@banswarasyntex.cim

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman (U.T.)
Phone::+91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.3-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT-394230 (GUJARAT)
Phone:+91-261-2390363
Email:info@banswarasyntex.com

Visit us at :www.banswarasyntex.com

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय)

प्रतापनगर, उदयपुर – 313001 (राजस्थान)
फोन 0294.2492441 फैक्स 0294–2492440 E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

"NAAC Accredited 'A' Grade University"

73वें स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

ADMISSION NOTICE

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय फोन : 0294-2413029, 2410776 मो. 9829160606
Faculty of Social Sciences & Humanities

• BA • M.A.
डिप्लोमा कोर्सेज : पीजी डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेंसिंग, डी.जे.एम.सी., पंचकर्म पद्धति (पीजी)
सर्टिफिकेट कोर्सेस : स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियेंसी इन इंग्लिश एण्ड कम्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मेथड्स एण्ड डेटा एनालिसिस, ह्यूमन राइट्स।

Faculty of Commerce फोन : 0294-2413029, 2410776 मो. 9460273633

• B.Com. • BBA • M.Com. • M.I.B.
• मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट।
डिप्लोमा कोर्स : पीजी डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट।
सर्टिफिकेट कोर्सेस : प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मेन्यूफेक्चरिंग स्किल्स, टैली, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.)।

Faculty of Science फोन : 9461179656, 9461189371

• B.Sc.(Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
• M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
• M.Sc. Mathematics

ज्योतिष विज्ञान विभाग मो. 9460030605

• एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान • डिप्लोमा ज्योतिष • डिप्लोमा वास्तु • प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्मकाण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

Evening College फोन : 9829332300

बी.ए., बी.कॉम., एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एस.सी. (मनोविज्ञान), एम.ए. (म्यूजिक), बी.लिब, एम.लिब., बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.सी.टी.आई., बी.एड. (आर.सी.आई. से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं काउंसलिंग, बी.जे.एम.सी. एवं डी.जे.एम.सी.।

Department of Physical Education फोन : 9352500445

• Diploma in Yoga • M.A. in Yoga • M.A. in Physical Education

Department of Physical Education मो. : 9829943505, 9352500445

मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) • MA (Yoga Education)

Department of Law मो. : 9414343363

• LL.B.(3 Years) • LL.M.(2 Years) • B.A.LL.B.(5 Years) • PGDCL • PGDLFS • PGDLL

Department of Physiotherapy फोन. : 0294.2636271 मो. 9414234283

• Master of Physiotherapy • Bachelor of Physiotherapy
• Felloowship in Palliative care and oncology rehabiliatation
• Fellowship in Neurological rehabiliation

Faculty of Computer Science and Information Technology
फोन : 0294-2494221, 2494217 मो. 9887265752, 9414737125

• MCA • M.Sc. (Computer Science)
• P.G.D.C.A • B.C.A. • M.C.A. Lateral Entry

Rajasthan Vidyapeeth Technology College मो. 9950304204 फोन : 0294-2490210

Diploma in Engineering (Polytechnic)
• Civil Engineering • Electrical Engineering • Mechanical Engineering
• Electronic Engineering & Communication Engineering
• Computer Science Engineering

Department of Pharmacy (फोन : 0294-2492440 मो. 9414063044)

• D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Institute of Rajasthan Studies फोन : 0294-2491054

• M.A. प्राचीन, भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
• PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

Udaipur School of Social Work फोन : 0294-2491333

• MSW • PG Diploma-HRM • Rural Development(PGDRD)
• PG Diploma • NGO Management – Talent Management

Directorate of Janshikshan & Extension Programme
फोन : 0294-2490723, 9414731125

• PG Diploma in Criminalogy & Police Science
• Diploma in Criminalogy & Police Science

School of Agricultural Sciences

• B.Sc.(Hons.) Agriculture (कृषि)

Department of Travel, Tourism & Hospitality
Faculty of Management Studies 9950489333

Course name	Duration of Course	Eligibility
• BBA (Tourism & Travel) with Specialization in Hospitality	3 Years	12th pass in any stream
• Diploma in Hotel Management Food & Beverage Service	1 Years	12th pass in any stream
• Diploma in Hotel Management (Food Production)	1 Year	12th pass in any stream

Girls College, Dabok फोन. : 0294-2655223 मो. 9694881417

• B.A. • B.Com. • B.Sc. • M.A. • M.Com. • M.A.(Hindi, Pol. Sc., History, Geography, Sociology, Economics)
• M.Com (Accountancy)
• Special Classes for English Speaking and Computer Basics

R.V. Homeopathic Medical College & Hospital, Dabok
फोन. : 0294-2655974, 2655975 मो. 09414156181, 9351343148

• बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (BHMS)

Faculty of Management Studies (FMS)
फोन. : 0294-2490632 मो. 9461260488, 9782049628

• MBA • MHRM

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc, please go through our website **www.jrnrvu.edu.in**, respective prospectus or contact concerned department

Registrar